निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष २ अंक १२ | मार्च-अप्रैल १९८४

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री कल्की, साक्षात् श्री सहस्रार स्वामिनी

कविता

कैसे व्यक्त करें हे माँ,
तेरा यह निर्मल प्रेम ।
भूल गया मैं जग सारा,
हुआ पुलकित रोम रोम ।१।

भटक गया था पथ,
मैं बालक नादान ।
खो गया भूल भुलैया में,
पर तूने लिया पहचान ।२।

उलझ गया था बीच भंवर में,
असहाय होकर पुकारा ।
हर बार आर्त को,
तूने दिया सहारा ।३।

हे दयामयी ! मुझे उबारा,
दिव्य प्रेम में नहलाया ।
सींच कर प्रेमामृत,
पुचकारा सहलाया ।४।

प्राण - सम तूने,
मुझको रखा संभाल ।
फिर भय अब कैसा,
करे तू देखभाल ।५।

बंद हुई सिसकियां मेरी,
अब सहज प्रेम पाया ।
इसीलिये हृदय मेरा,
प्रेम का ही गीत पाया ।६।

With Compliments from

Rishi Electronics

B-16, OKHLA INDUSTRIAL AREA
NEW DELHI-110020

सम्पादकीय

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वंद्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमल मचलं सर्वधी साक्षिभूतम् ।
भवातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ॥

सदगुरू को बार-बार प्रणाम है जो साक्षात् ब्रह्मानन्द है, ज्ञानमय है, आसमान के समान प्रसन्नता देने वाला है, द्वैताद्वैत से परे है, परम शुद्ध है, नित्य है, अविचल है, साक्षी है, भावुकता और तीनों गुणों से परे है।

खोजी-जनों की जन्म-जन्मान्तर की इच्छा पूर्ति के लिए ही साक्षात् परब्रह्म परमेश्वरी, आदि-शक्ति ने आज शरीर धारण कर, भक्तों को अपने चरणों में स्थान दिया है। सदगुरू की तलाश में जीवन समाप्त हो जाता है किन्तु यह उनकी दयालुता और प्यार ही है जो हमें आत्म-साक्षात्कार के रूप में बिना किसी प्रयास के मिल रहा है।

हमें तन-मन-धन सब कुछ अपने सद्गुरू को सौंप देना चाहिए। श्री माता जी को तन और धन नहीं चाहिए चूंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उन्हीं का है। मात्र मन अर्थात् चित्त सौंपने से ही सब कुछ हो जाता है।

सहजयोग के कार्य में साधन बनना ही हमारा ध्येय होना चाहिए।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : श्रीमति लोरी हायनेक
३१५१, हीदर स्ट्रीट
वैन्कूवर, बी. सी.
वी ५ जैड ३ के २

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत : श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

श्री राजाराम शंकर रजवाड़
८४०, सदाशिव पेठ, पुणे-४११०३०

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में . . . . . **पृष्ठ**

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. मूलाधार व नाभि (परमपूज्य माताजी का प्रवचन) ... ३
४. नव वर्ष १९८४ (,, ,, ,, ,,) ... २०
५. बोर्डी पूजा (,, ,, ,, ,,) ... ३३

श्री माताजी का प्रवचन

मावलंकर हॉल, नई दिल्ली
दिनाँक १५-३-८४

मूलाधार व नाभि

परमात्मा को खोजने वाले सभी सात्विक साधकों को हमारा प्रणाम !

आज दो तरह के गाने आपने सुने हैं, पहले गाने में एक भक्त विरह में परमात्मा को बुलाता है। इसे अपरा भक्ति कहते हैं। और जब परमात्मा को पा लेता है, जैसे कबीर ने पाया था, तो उसे परा भक्ति कहते हैं। दोनों में ही भक्ति है। इसे कृष्ण ने अनन्य भक्ति कहा है—जहाँ दूसरा कोई नहीं होता, जहाँ साक्षात् परमेश्वर अपने सामने होते हैं, उस वक्त जो हम लोगों का भक्ति का स्वरूप होता है उसे उन्होंने परा भक्ति कहा—अनन्य भक्ति।

किन्तु जब हम परमात्मा को याद करते हैं, उनको स्मरण करते हैं, तब उसकी आदत-सी हो जाती है। जब इन्सान को इस चीज की आदत-सी हो जाती है, तो उस आदत से छूटने में उसे बड़ा समय लग जाता है। वह मानने को तैयार ही नहीं होता कि उसकी यह जो साधना है, यह खत्म होने की बेला आई है। और इसी वजह से भक्तों ने भी दृष्टाओं को, सन्तों को, मुनियों को पहचाना नहीं। आप जानते हैं इतिहास में हमेशा सन्तों को इतनी परेशानियाँ उठानी पड़ीं। यह नहीं कि सबने उनको सताया, लेकिन जिन्होंने सताया उनको किसी ने रोका नहीं और उनको समझाया नहीं कि ये सन्त हैं, साधू हैं।

अब हमारे समाज में, खासकर के शहरों में, विविध विचारों के लोग रहते हैं। कुछ तो जो कि परमात्मा में विश्वास करते हैं। इस तरह विश्वास करते हैं, कि जैसे कि किसी मंदिर में गये, नमस्कार कर दिया। कुछ लोग हैं जो कहते हैं "नहीं, परमात्मा की साधना करनी चाहिए और धर्म से रहना चाहिए, उनके मंगल गीत गाने चाहियें, हमेशा उनको भजना चाहिए, जिससे वो हमेशा याद रहें।" कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वो जो कहते हैं कि "परमात्मा वगरैह सब ढकोसला है, यह झूठी चीज है। परमात्मा नाम की कोई चीज ही नहीं है।"

सब तरह के विचार करने का अधिकार परमात्मा ने मनुष्य को दे दिया है। यह मनुष्य को दी हुई देन परमात्मा की ही है कि वो स्वतन्त्र है। जो चाहे वो सोच सकता है इस बुद्धि से। लेकिन हम लोगों को तीनों दशा में ये ही सोचना चाहिए कि आज तक हमने जो कुछ भी किया, चाहे परमात्मा में विश्वास किया, उनको भजा या उनके ऊपर लैक्चर दिये, या उन पर किताबें पढ़ीं, जो भी मेहनत करी या हमने उन पर विश्वास नहीं किया, उनको कहा कि वे हैं नहीं। उनसे हमने मुठभेड़ की और कहा कि देखते हैं परमात्मा कहाँ है ? इन सभी दशाओं में हमें यह सोचना चाहिए कि " इसने हमारा क्या भला किया ? हमें क्या लाभ हुआ ? हमारे अन्दर कौन सी ऐसी कोई नई प्रकृति आ गयी जिसके कारण हमने जो भी किया सो ठीक है। हमारे बाप दादे

भी यही करते आए हैं। और उनके बाप दादा भी यही करते आए। और हजारों वर्षों से यही चीज चलती रही।"

सहजयोग में हम लोग इड़ा और पिंगला, दो नाड़ी पर ध्यान दे रहे थे। इसमें से जो इड़ा नाड़ी है, यह भक्ति-प्रबल है। इड़ा नाड़ी पर लोग भक्ति में लीन हो जाते हैं, अपने भावना में बह जाते हैं, और परमात्मा में लीन होकर के आनन्द से उनका गान गाते हैं। हमारे महाराष्ट्र में जो कि मैं सोचती हूँ हिन्दुस्तान में एक बहुत बड़ा प्रदेश है, क्योंकि यहाँ पर पारम्परिक लोग धार्मिक हैं। और यहाँ का आराध्य-देव श्री कृष्ण विट्ठल हैं। लोग एक-एक महीना हाथ में झांझर लिए हुए गाते हुए जाते हैं "विट्ठल, विट्ठल, विट्ठल", मुंह में तम्बाकू रखे। अब तम्बाकू जो है; ये कृष्ण के विरोध है। बिल्कुल विरोध में पड़ती है, क्यूंकि विशुद्धी चक्र में श्री कृष्ण का स्थान है। और उससे "विट्ठल विट्ठल" कह रहे हैं। श्री कृष्ण का नाम ले रहें हैं, और उनका जो विरोध है उसी को मुंह में रखे चले जा रहे हैं। ऐसे बहुत से लोग मैंने देखे जो मुझसे आकर कहते हैं कि "माँ, हम तो जिन्दगी भर विट्ठल ही की वारी करते रहे। हर बार वहाँ पैदल जाते रहे और एक-एक महीना हमने मेहनत करी।" बहुत से पढ़े लिखे लोग भी ऐसा कार्य करते हैं—"लेकिन हमें तो परमात्मा मिले नहीं।" एक मुसलमान साहब थे, जो कि बहुत परमात्मा को खोजते थे। अन्त में वो हिन्दू हो गए। उनका कहना था कि परमात्मा मुसलमान होने से तो मिलता नहीं, चलो हिन्दू होकर मिल जाए, तो वो हिन्दू हो गये। हिन्दू होकर के वो इसी तरह से "विट्ठल विट्ठल" करते जाते थे। तो उन्होंने कहा कि "पहले तो नमाज पढ़ पढ़ के मेरे तो घुटने छिल गए, फिर वारी कर कर के मेरे तलुए सब छिल गए, और यह सब होते हुए मैंने यह देखा कि परमात्मा तो मिला नहीं। जो विट्ठल के सामने लोग खड़े हैं, वो भी परमात्मा के पास नहीं, और जो लोग वहाँ जाते हैं वो भी परमात्मा के पास नहीं।" हम लोग इसी प्रकार हर समय कभी कोई अखंड पाठ कर रहे हैं, कभी कोई परमात्मा को याद कर रहे हैं।

इस प्रकार हम अपनी भक्ति में परमात्मा को याद करते रहते हैं। उससे एक चीज जरूर है कि परमात्मा की तरफ हमारा चित्त है। नामदेव ने कहा है कि एक लड़का गर पतंग उड़ा रहा है और पतंग आकाश में जा रही है, उधर सब बच्चे उसके साथ खेल रहे हैं। वो बातें भी कर रहा है, सबसे मजाक कर रहा है। और यह करते वक्त भी उसका चित्त उसी आकाश के ऊपर तनाया हुआ जो उसका पतंग है, उसकी ओर है। इस प्रकार एक साक्षात्कारी मनुष्य का हो जाता है कि उसका पूरा चित्त उसी ओर होता है।

लेकिन जो नहीं हुआ, जिसने साक्षात्कार नहीं पाया उसके लिए उचित था कि वो परमात्मा को याद करे। लेकिन यह सब करने से गर परमात्मा को याद किया और परमात्मा ही नहीं मिले—जैसे आपने कहा कि यह आकुल-व्याकुल लोग ढूंढ रहे हैं परमात्मा को, और उनको अगर परमात्मा नहीं मिले—तो जरूरी है कि मनुष्य कहेगा कि, "हां, परमात्मा नाम की कोई चीज ही नहीं है।" लेकिन, क्यूंकि हमें उसका अनुभव नहीं हुआ, प्रचिति नहीं हुई इसलिये उस चीज को पूरी तरह से मना करना, मेरे ख्याल से, अशास्त्रीय है। उसको जाने बगैर, उसकी प्रचिति पाए बगैर उसको कह देना कि वो नहीं है—कोई सी भी चीज हो—मेरे ख्याल से एक तरह से escapism (पलायनवाद) है।

परमात्मा है, चाहे आप उसे मानें या न मानें। मैंने आपको बताया था कि यह फूल इसको कौन बनाता है ? इन फूलों से फल कौन बनाता है ? हमें अपने मां-बाप जैसे कौन बनाता है ? कौन हमारे

अन्दर हमारे हृदय को चलाता है ? हमारे अन्दर अनेक ऐसे व्यवहार हैं जो medical science (चिकित्सा विज्ञान) कभी भी समझा नहीं सकती कि कैसे होते हैं। इसीलिए ही मनुष्य भक्ति पर उतरता है और परमात्मा को याद करता है।

पिंगला नाड़ी पर जब हम आते हैं तो वहां पर मनुष्य ने यह सोचा कि परमात्मा ने जो यह सृष्टि रची है, इस सृष्टि जो में पाँच पंचमहाभूत है, जो elements हैं उसके बारे में जान लिया जाए, उन पर प्रभुत्व पाया जाए। तो उन्होंने यज्ञ-प्रादि वगैरह शुरू कर दिया, वेद वगैरह रचे गये। पर वेद में भी बिल्कुल शुरू में लिखा है कि वेद से अगर 'विद्' नहीं हुआ, अगर उसकी प्रचिति नहीं आई, तो सारा वेद परायण हो गया।

इस भारतवर्ष की एक महिमा है, बहुत बड़ी महिमा है। कोई कितना भी बड़ा शास्त्री हो, पंडित हो, वेद व्यास हो, कुछ हो, लोग उसके सामने हाथ नहीं जोड़ते। पर अगर कोई सन्त, फकीर हो, हाथ में झोली लिये भी हो, और संत हो, माना हुआ संत हो तो लोग उसके सामने झुक जाते हैं, फिर वो राजा हो, चाहे वो कुछ हो। यह अपने देश की बड़ी महिमा है। ऐसे आपको कहीं भी नहीं दिखाई देगा। यह इसी देश में होता है क्यूँकि इस देश की अपनी एक बड़ी विशेष पुण्य है। यहाँ बड़े बड़े पुण्यात्मा, धर्मात्मा, संत-साधु हुए हैं। हमारी दृष्टि जो वाह्य की ओर लग गई है इससे सबसे बड़ा प्रश्न खड़ा हुआ है कि अब सबकी दृष्टि अन्तर्मुख कैसे करें ? और सबसे पहले कि यह लोग जानें कि इसी देश में, इसी महान देश में ही यह सारा ज्ञान बसा हुआ है।

अब जो भी बातें मैं आप से बता रही हूँ, इस को आप इस तरह से देखिए जैसे एक Scientist (वैज्ञानिक) के सामने कोई Hypothesis (धारणा) रखी जाये। अगर आप उसको इस दृष्टि से देखें तो आपको समझ में आ जायेगा कि जो मैं बातें कह रही हूँ वो आपको पहले देख लेनी चाहिये, जान लेनी चाहिये, फिर प्रचिति आने के बाद में उसको आपको जाँचना चाहिये कि यह बात सत्य है या नहीं; परमात्मा है या नहीं। लेकिन पहले धारणा तो करनी पड़ती है। ये धारणा तो करनी पड़ती है कि ऐसी ऐसी बातें हैं, इसे सुनना चाहिये। उसी बात पर आप अगर उखड़े हुये हैं तो फिर आगे बढ़ ही नहीं सकते। पहले आप इसे धारिये, जो मैं बात कह रही हूँ, इसको आप समझने का प्रयत्न करें।

मैंने आपसे इन तीनों नाड़ियों के बारे में संक्षिप्त में बताया हुआ था। आज मैं आपको अलग-अलग चक्रों के बारे में बताना चाहती हूँ। आपके अन्दर सात चक्र मुख्य हैं। यह नहीं कि सात ही चक्र हैं। सात मुख्य चक्र माने जाते हैं। यह सब ज्ञान हमारे देश के मूल का ज्ञान है। यह आपको किताबों में नहीं मिलेगा। यह बड़े बड़े ऋषि-मुनियों ने इसका पता लगाया और कुछ कुछ इस पर किताबें भी हैं। लेकिन बड़े सकील तौर की हैं, और दूसरा यह भी है कि ये उपलब्ध भी नहीं। यह सात चक्र हमारे अन्दर ऐसे बनाये हुये है, बढ़िया तरीके से, कि जैसे कि एक के बाद एक माने सीढ़ियाँ हों। ये सीढ़ियाँ हमारे उत्क्रान्ति में बनाई गई। जब से हम कार्बन थे, तब से लेकर के धीरे धीरे जैसे हम उठने लग गए वैसे वैसे हर उत्क्रान्ति का जो एक एक टप्पा हमने हासिल किया, उसके अनुसार जैसे कि एक एक माईल-स्टोन (Milestone) बनाया गया है।

सबसे पहले कार्बन का जो हमारे अन्दर प्रादुर्भाव हुआ; वो है पहला चक्र, जिसे कि 'मूलाधार-चक्र' कहते हैं। इस चक्र के बारे में भी बहुत से लोगों को बहुत गलत-फहमियां हैं। कुण्डलिनी के बारे में तो, जिसे देखिये वो ही लिखने लग जाता है। मैंने ऐसी भी किताबें पढ़ी हैं कि जिनको पढ़ने के बाद आदमी यह कहेगा, 'कुण्डलिनी के पास जाने की कोई जरूरत नहीं।'

एक साहब ने लिखा है कि उसको कुण्डलिनी जागरण हो गया, उसके अन्दर बिजली चमकने लग गई। किसी ने लिखा कि मेरे अन्दर छाले आ गए। किसी ने कहा मैं मेंढक जैसे कूदने लग पड़ा। हिन्दी में ही नहीं, अंग्रेजी में भी ऐसी किताबें बहुत छपी हैं।

वास्तविक कुण्डलिनी आपकी माँ है। हरेक इन्सान की माँ है। अपनी एक-एक व्यक्तिगत माँ है। और यह माँ आपको आपका दूसरा जन्म देती है। यह जो माँ है, यह माँ क्या आपको कोई तकलीफ़ देगी? जब आपका जन्म हुआ था तो आप की माँ ने आपको तकलीफ़ दी, या सब तकलीफ़ खुद उठाई? फिर यह जो माँ, जो विशेष एक देवी मां है, तो क्या आपको तकलीफ़ देगी? या आपको परेशान करेगी? बुद्धि से भी काम लेना चाहिए। जो लोग इस तरह की बातें करते हैं या तो वो इस काबिल नहीं हैं कि कुण्डलिनी पर कोई भी हाथ चलाएं। हो सकता है वो धर्म-परायण न हों, अधर्मी हों। उनके चरित्र अच्छे न हों, वो रुपया पैसा बनाते हों, लोगों को ठगते हो। हर तरह की उनमें गड़बड़ हो सकती है। हो सकता है कि उनको इसके बारे में कुछ भी जानकारी न हो। हो सकता है कि उन पर किसी ने कुछ भूत-प्रेत विद्या करके उनको भस्मसात कर लिया हो। कुछ भी हो सकता है। लेकिन कुण्डलिनी जागरण से आज तक हजारों लोगों की कुण्डलिनी का जागरण हो गया है सहजयोग से लेकिन हमने कहीं नहीं देखा कि लोगों में ये परेशानी या तकलीफ़ होती है।

कुण्डलिनी खुद सूझ-बूझ रखती है। पूरी तरह की सूझ-बूझ कुण्डलिनी के अन्दर है। और जैसे कोई एक टेप-रिकार्ड होता है उसी प्रकार इस साढ़े तीन वलह में इसने आपका पूरा इतिहास लिखा हुआ है। जब से आप कार्बन थे, तब से आज तक का पूरा इतिहास इसमें है। यह जानती है कि आप ने क्या क्या गलतियां कीं, आप कौन से गलत रास्ते पर गए, आप ने क्या क्या अपने साथ दुर्व्यवहार किया है, दूसरों के साथ दुर्व्यवहार किया है, क्या क्या आपने ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के मार्ग में एक तरह से रुकावटें हो सकते हैं, बधिक हो सकते हैं। वो सब कुछ तो जानती है। उसके पास इसका हिसाब किताब पूरा है।

लेकिन वो आपकी मां है। माँ ये नहीं सोचती कि मेरा बेटा कितना दोषी है। वो यह सोचती है किस तरह से इस बेटे को जो है, मैं उसका जो धन है उसे दे दूं। किस तरह से उसे मैं बचा लूं। माँ का ये नहीं विचार आता—समझ लीजिए किसी का बच्चा डूब रहा हो, तो माँ यह नहीं सोचती है कि इसने मेरे साथ क्या क्या दुष्टता की, कितना सताया। वो सोचती है जो भी हो सब माफ़। इस वक्त यह बच्चा बच जाए। इसी प्रकार से ये माँ आपकी यही सोचती है कि आप को किसी तरह से बचा लिया जाए। लेकिन इस माँ के लिए आप का जो बाल्यावस्था में पाया हुआ अबोधिता का धन है, जिसे हम लोग innocence कहते हैं, वो मूलाधार चक्र पर स्थित है। ये कुण्डलिनी जो है ऊपर स्थित है, और मूलाधार चक्र नीचे में है। कुण्डलिनी स्वयं मूलाधार में बसी है। 'मूलाधार' किसे कहते हैं कि 'मूल का आधार'। अगर मूल कुण्डलिनी है, तो उसका आधार माने उसका गृह, उसका घर जो है वो आपकी ये त्रिकोणाकार अस्थि है, और उसके नीचे गणेश तत्व जो बसा हुआ है वो आपके अन्दर बसी हुई अबोधिता है।

आजकल तो चालाकी करना, होशियारी दिखाना, बदतमीजी करना, या ऐसे कहें कि अपने चरित्र के साथ हर समय विडम्बना, यह एक तरह का लोगों का बड़ा शौक हो गया है। लोग सोचते हैं कि इसमें उन्होंने बहुत कुछ कमा लिया। अपने पवित्रता के साथ छलना करना, अपने साथी के साथ हमेशा कोई न कोई उपाधि लगा लेना, इस

पर हमारा बड़ा विचार चलता है कि किस तरह से कैसे क्या किया जाए।

यह चक्र जो है हमारे अन्दर बहुत महत्वपूर्ण है। हालांकि इस देश में यह चक्र बहुत बलवान है क्योंकि कुछ भी हो, इस देश में पवित्रता का अर्थ लोगों को मालूम है। लोग गलत काम करते हैं, लेकिन वो जानते हैं कि यह गलत है। इन परदेश में मैंने देखा कि वो गलत काम करते हैं, इस तरह से विचित्र बातें करते हैं कि समझ में नहीं आता कि यह इन्सान हैं या जानवर हैं और वो यह सोचते हैं कि उन्होंने बड़ी कमाई कर ली, वे तो एकदम freedom (स्वतन्त्रता) पे आ गए। उन्होंने बहुत कुछ पा लिया कि इस तरह के गन्दे काम वो कर रहे हैं।

श्री गणेश विशेष करके जो बनाए गए हैं, उनका रूप ऐसा है कि उनके सिर पर हाथी का सिर है। वजह यह कि हाथी एक पशु है, और पशु कभी भी अहंकार एकत्रित नहीं करता। इसी-लिए उसके अन्दर अहम् की भावना नहीं है, वो चिर का बालक होता है। और गणेश जी चिर के बालक हैं। लेकिन उनके अन्दर वो आयुध है और जो विशेष तरह के उनके पास में जो व्यवस्थाएँ हैं, उन सब व्यवस्थाओं से वो मनुष्य के अन्दर जो pelvic plexus है उसको सम्भालते हैं। पर ये इतने शक्तिशाली हैं कि अगर आप किसी भी तरह से कुण्डलिनी पर आघात करने का प्रयत्न करें, या जो आदमी धर्म-रहित है, जिसमें चरित्रहीनता है, ऐसा आदमी कोशिश करे कि कुण्डलिनी को चढ़ाए वो इस क़दर नाराज हो जाते हैं (गणेश सबसे नीचे बैठे हुए हैं लेकिन इसके साथ ही इड़ा नाड़ी ऊपर जुड़ी हुई है) कि इड़ा नाड़ी पर उनका क्रोध जब चढ़ता है तो आदमी के शरीर में यहां से लेकर यहां तक (बाँए भाग में नीचे से ऊपर तक) blisters (फफोले) भी आ सकते हैं। ऐसा आदमी गर्मी से तड़प सकता है, उसको तकलीफ़ हो सकती है। यह गणेश का तत्व जो है, जितना सुखदाई है उतना ही क्षोभकारी है। अत्यन्त क्रोधवान है।

हम भारतवर्ष में गणेश आठ 'अष्ट विनायक' आप जानते हैं, ये जागृत हैं, पृथ्वी के तत्व से निकले हैं। अब हम लोग मानते तो हैं कि वैष्णों देवी, वहाँ जाना चाहिए। इस मंदिर में जाना है, उस मंदिर में जाना है। लेकिन यह जागृत तत्व क्या है? क्या हम जानते हैं ये जागृत तत्व क्या है? क्या ऐसी कोई सच्ची बात है कि वास्तविक कोई ऐसे जागृत तत्व का कोई स्थान है? ऐसा स्थान है। क्योंकि पृथ्वी तत्व जो है, यह स्वयं साक्षात् जागृत है।

आपको आश्चर्य होगा, मैं एक छोटी-सी जगह मुसलवाड़ी में गई, वहां पर लोगों ने मुझे बताया कि यह जागृत स्थान है, और वहां पर कोई भी दीवार नहीं बना सके। एक अंग्रेज ने कहा कि यहां पर अजीब-सी जगह, यहाँ पर कोई आप दीवार नहीं बना सकते, कोई बन्ध नहीं बना सकते। तो बंध को ऐसे सीधे लेने के बजाए उसे गोल घुमा दिया, और फिर इस तरह से ले गए और पता यह हुआ कि ये जगह पर एक फ़क़ीर ने आकर बताया कि "यह जगह माँ की है, इसे छोड़ दीजिए।" जब हम लोगों ने जाके देखा तो उसके अंदर से, चैतन्य की लहरियाँ—ठंडी ठंडी, लहर-सी चल रही थीं—साक्षात् सारा सहस्रार।

लेकिन यह चीज सिर्फ एक फ़क़ीर या कोई सन्त-साधु या कोई सहजयोगी ही बता सकता है। जिसको इसकी अनुभूति नहीं है वो नहीं बता सकता कि यह चीज जागृत है या यह झूठ है। या यह सच है या झूठ है। इसके लिए आपको तो ऊंची संवेदना, जिसे कि हम लोग सामूहिक संवेदना कहते हैं, उसमें जागृत होना पड़ता है। फिर मैं कहूँगी कि आपको जागृत होना पड़ता है। सिर्फ लेक्चर-बाजी से नहीं होता है। आपको होना है। जब तक

आप इसमें 'प्राप्त' न होंगे, जब आपके अन्दर इसकी 'प्रचिति' नहीं आएगी, जब तक यह आपको 'विद' नहीं होगा, तब तक आपमें और उन साक्षात् कारियों में हमेशा अन्तर रहेगा। इस चक्र की विशेषता यह है कि जब कुण्डलिनी का जागरण होता है—जैसे आप मेरे ओर अपने हाथ खोल के बैठें, तो अच्छा रहेगा भाषण करते ही काम हो सकता है, आप मेरे ओर इस तरह से हाथ करके बैठें हुए हैं, तब आपकी ये जो पाँच उंगलियों में, जो Sympathetic nervous system के ends हैं इस प्रकार सात चक्र left side में और सात चक्र right side में। अब यह जो सात चक्र हमारे left और right में हैं, जैसे मैंने बताया था, आपस में मिल जाते हैं, और सुषुम्ना नाड़ी ऐसे उनके बीच में होती है।

अब आप जब मेरी ओर हाथ करके बैठे हैं, तो धीरे-धीरे, धीरे-धीरे इस में से चैतन्य बहना शुरू हो जाता है। जब चैतन्य बहना शुरू हो गया तो वो जाकर वहाँ (मूलाधार चक्र) पर श्री गणेश को खबर देता है कि अब कोई अधिकारी सामने खड़ा है। यह अधिकार आपको स्कूलों में, कालेजों में या किसी theosophical society में या theology में या पठन आदि से किसी से भी नहीं मिलता। यह अधिकार जो, है यह साक्षात्-कारी मनुष्य को ही अधिकार है। जब ऐसा व्यक्ति जो जानकार हो, उसके सामने आप इस प्रकार हाथ फैलाते हैं, तो गणेशजी को पहले इसका न्योता मिलता है कि आप कुण्डलिनी से अब कहें कि आपको निमन्त्रण है और आप चढ़ें। गणेश जी के बगैर यह काम नहीं हो सकता। अब अगर किसी डाक्टर से कहा जाए कि गणेश जी हैं यह आपके prostate gland को देखते हैं, सम्भालते हैं, संवारते हैं तो कहेंगे कि "क्या बात कर रहे हैं माता जी, गणेश जी का और medical का क्या सम्बन्ध ?" medical science जो है, यह तो ऊपर में है। लेकिन उसके जड़ में अगर श्री गणेश बैठे हैं तो एक मिनट अपने बुद्धि से यह पूछें कि "अगर इससे हमारे प्रश्न किसी तरह से सुलझ सकते हैं, तो क्यूँ न इस चीज को हम समझें कि श्री गणेश क्या हैं और उनका हमारे अन्दर जागृत होना कितना जरूरी है ? एक महाशय थे, वो हमारे पास आये, और कहने लगे कि "माँ मुझे prostate की तकलीफ़ हो गयी है, डाक्टर कहते हैं कि आपरेशन करवाओ। वो बड़े सहजयोगी थे, दूसरे गणेश भक्त। मैंने कहा आप इतने बड़े गणेश भक्त हैं, आपको कैसे prostate हो गया ? मेरी समझ में नहीं आता। क्या गणेश आपसे नाराज हो गए हैं ? कहने लगे "माँ, पता नहीं मैं तो बड़ी गणेश की भक्ति करता हूँ।" मैंने कहा "अच्छा। तो भई चना खाओ। आज हमारा प्रसाद चना है, तो चना खाइये।" तो इधर उधर देखने लग गये। मैंने कहा "आनाकानी क्यूं कर रहे हैं ?" कहने लगे "आज संकष्टी है, और संकष्टी में मैं उपवास करता हूँ।" मैंने कहा "यही तो वजह है। जिस दिन गणेशजी का जन्म हुआ तो उस दिन आप उपवास कर रहे हैं ? यह किसने आप को बताया है कि जिस दिन जन्म हो उस दिन आप उपवास करें ?" अब धर्म में कितने दोष हैं देख लीजिये। बहुत से लोग कहते हैं कि "धर्म हम इतना करते हैं। हम इतने धार्मिक हैं माँ, तो भी हम बीमार हैं।" अब देखें, छोटा सा दोष देख लें, कि जब राम का जन्म होता है, तब उपवास करेंगे, कृष्ण का जन्म होगा तब उपवास करेंगे। और नर्कचतुर्दशी, जिस दिन नर्क का द्वार खुलता है, उस दिन बैठकर सवेरे खाना खायेंगे। सब उल्टी बातें। बिल्कुल उल्टी बातें। यह पता नहीं किसने सिखाया। जिस दिन आपके घर में बेटा पैदा होगा उस दिन आप क्या उपवास करेंगे ? जिस दिन दत्तात्रेय पैदा हुए उस दिन उपवास है देख लीजिए, जिस दिन जिसका जन्म हुआ उस दिन उपवास करते हैं। उस दिन उपवास करने की क्या जरूरत है। मेरी समझ में नहीं आता। दूसरा यह कि परमात्मा के नाम पर क्यों उपवास करते हो ? उसने कब कहा था

कि आप उपवास करिये ? आपको करना है आप करिये । आपको शौकिया उपवास करना है, करिये। इस देश में तो ऐसे ही लोग उपवास में रहते हैं। लेकिन धर्म में हम इतनी गलतियाँ करते हैं और बिल्कुल नासमझी से, जिसने जैसे कह दिया। स्त्रियाचार, ब्राह्मणाचार की वजह से हमारे धर्म में भी इतने दोष आ गए हैं। वही हाल मुसलमानों का है, वही हाल इसाईयों का है, यही सिक्खों का है। सब का एक ही है कि अपनी बुद्धि से हम उसको समझते नहीं हैं कि किस वक्त क्या करना चाहिए। अब इनसे मैंने कहा कि खाइये। आपको विश्वास नहीं होगा, उन्होंने वो खाया। मैंने कहा "अब छोड़िये, आज से आप यह promise (प्रतिज्ञा) करिये कि सकष्टी के दिन मोदक आप बना कर खायें। क्यूंकि उनको मोदक प्रिय हैं, इसलिए आप मोदक बना के खायें। तो कहा कि "मां मैं आपको Promise (वचन) देता हूँ कि मैं मोदक खाऊंगा।" आपको आश्चर्य होगा कि उनका prostate — पूना वो पहुँचे और उन्होंने चिट्ठी भेजी कि माँ मेरा prostate गायब — उसकी तकलीफ़ ही गायब। इसी प्रकार धर्म में हम अनेक, अनेक, अनेक गलतियाँ करते हैं। और इस लिए जब हम कहते हैं कि "हमने धर्म धारण किया है। हम यह करते है वो करते हैं, फिर हमें माँ क्यों हुआ ?" इसका परमात्मा पर कोई दोष मत दीजिये। दोष है जिसने आपको समझाया और बताया। जैसे कि लोग बताते हैं कि जब कुण्डलिनी जागरण होता है तो बड़ी गर्मी होती है और ऐसा होता है, वैसा है। सब झूठ है। एकदम झूठ है। ऐसा कुछ भी नहीं। इस बात पर आप बिल्कुल मत विश्वास रखें। यह लोग सब पैसा बनाने वाले आपको डरा डरा के ऐसा दिखाते हैं कि यह बड़े कहीं के पहुँचे हुए लोग हैं। और इस से आपको गलत रास्ते पर डाल देते हैं, और आप फिर ये पूछने लग जाते हैं कि "भई हमारी कुण्डलिनी जागरण हुआ उससे तो हमारी हालत ही खराब हो गई। हम तो पागलखाने पहुँच गए।" होना ही है। क्योंकि वो कुण्डलिनी का जागरण नहीं। वो आप के sympathetic nervous system की overactivity हो जाती है जिससे आप पागल हो सकते हैं।

अब श्री गणेश के बाद स्वादिष्ठान चक्र है। उससे ऊपर में जो चक्र है वास्तविक यही दूसरा चक्र है जिसे नाभि चक्र कहते हैं। क्योंकि इसी चक्र से स्वाधिष्ठान चक्र बाहर निकल कर के, कमल जैसे निकलता है, और चारों तरफ घूम-घूम करके— और यह जो बीच में जो जगह बनी हुई है जिसे कि 'भवसागर' कहते हैं, अपने पेट की जो जगह है जिसे Viscera कहते हैं, इसके पूरी इसको, जितने भी उसमें organs हैं, इन्द्रियाँ हैं, सबको वो शक्ति देते हैं। इस चक्र में problem आने से diabetes वगैरह बीमारियाँ हो जाती हैं। लेकिन आज उस के जड़ में जो चक्र है जिसे कि नाभि चक्र कहते हैं, उसके बारे में मैं आपको बताऊँगी। नाभि चक्र जो है, यह विष्णु का चक्र है, नारायण का चक्र है। अब कोई कहेगा कि "मां, आप तो सब हिन्दू धर्म में कह रहे हैं।" लेकिन और भी लोग बहुत सारे सब इसी से विघटित हैं। ईसा मसीह ने भी कहा है कि जो मेरे विरुद्ध नहीं हैं, वो मेरे साथ हैं, 'Those who are not against me are with me' पर ईसाई लोग ये जाकर पता नहीं लगायेंगे कि और तो कौन हैं। उन्होंने तो बता दिया कि ईसा के सिवाय और कोई नहीं। इस्लाम ने बना लिया कि मोहम्मद के सिवाय और कोई नहीं। इस तरह से उन्होंने सबको एक एक छाँट छाँट के अलग कर दिया, जैसा कि एक आदमी लटका हुआ कहीं पड़ा हुआ था। सबकी रिश्तेदारी आपस में है। सिर्फ हम ही लोग उनके नाम ले लेकर के झगड़ा करते हैं। इस चक्र के आस-पास आप देखिये कि ये जो यह पेट का हिस्सा है, इसमें दस गुरू के तत्व हैं। इसमें से आप सोच सकते हैं कि शुरू से, 'आदि नादय' से लेकर के उनके गुरू हुए जैसे Socrates हैं, Lao-Tse, यह सब इसी में

आते हैं। Moses हैं, Abraham। और अपने देश में राजा जनक, नानक, मोहम्मद साहब और Zoroster (जरथस) और अभी आखिरी वक्त जो हुए हैं, वो हैं श्री साईनाथ 'शिरडी' के। यह सब इनके दस मुख्य अवतरण हुए। वैसे अनेक गुरू हुए हैं संसार में, लेकिन दस मुख्य अवतरण हैं। अब जो लोग गुरू को मानते हैं, कि 'गुरू को मान लिया'' देखिये गुरू को मान लेना भी एक बड़ी गलत फ़हमी की बात है। 'गुरू वही है जो साहिब से मिलायें'। जो साहिब से मिलाए, जो परमात्मा से मिलाए, वही गुरू है। लेकिन हमारे यहां हर तरह के गुरू निकल आये हैं। और आप जानते हैं कि हम इतने विक्षिप्त हो गए है, इतने भ्रांतमय हो गए हैं कि कोई भी आदमी जेल से छूट करके और बैठ जाये गेरुआ वस्त्र पहन के; लगे उसके चरण छूने। पहली तो बात यह है कि गेरुआ वस्त्र से हमारा क्या सम्बन्ध ? हम तो गृहस्थ के लोग हैं। गृहस्थियों का गेरुआ वस्त्र से कोई भी सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। आप जानते हैं, अगर आपने पढ़ा हो कि बाल्मीकि रामायण में, सीता जी ने पूरा chapter (अध्याय) इन सन्यासियों के बारे में कहा है, कि जो सन्यासी हैं उनको शहर में तो आना ही नहीं चाहिए। किसी गाँव में नहीं आना चाहिये। उसकी बहुत सारी मर्यादायें बताई। उस में यह कहा कि गाँव के बाहर उन्हें झोंपड़ी में रहना चाहिए और किसी भी गृहस्थ की ड्योढ़ी लाँघनी नहीं चाहिए। हाँ, जो गृहस्थ है गृहस्थ है। लेकिन जिसने सन्यास ले लिया उसको यह सब करना मना है। लेकिन हमारे यहाँ तो, देखिये कि हम लोग गृहस्थी के लोग यज्ञ करने में लगे हुए हैं, अपने बाल-बच्चों को सम्भालते हैं। कायदे से रहते, और उन (सन्यासों) लोगों का पालन-पोषण हमारी खोपड़ी पर। एक तो हमारे बाल-बच्चे पलते नहीं और ऊपर से इनके काशाय वस्त्र वालों को संवार कर बैठे रहिये सुबह से शाम तक। एक सीधी बात यह है कि कोई भी सन्यास लेने से परमात्मा के पास नहीं जा सकता। यह तो ऊपरी चीज है। 'सन्यास' अन्दर का भाव होता है बाहर का नहीं होता आप जानते हैं कि राजा जनक को विदेही कहा करते थे और उनकी लड़की को वैदेही क्योंकि विदेही से पैदा हुई थी। वो स्वयं राजा थे। राजा जैसे रहते थे, राजा जैसे आभूषण करते थे और उनके सामने बड़े बड़े साधू, सन्त, दृष्टा, नत मस्तक रहते थे क्योंकि उनकी दशा यही थी, क्योंकि वो स्वयं साक्षात् दत्तात्रेय के अवतरण थे। आदि गुरू के अवतरण थे। लेकिन आजकल हमारे देश में इसकी संवेदना जाती रही। लोग बहुत ही भ्रांत हो गए हैं और ऊपरी तरह से कोई ऊपर से कोई दिखाने वाला तमाशा वाला आदमी पहुँचा है, तो लोग उसके चरणों में पहले जाते हैं। कोई कोई तमाशा वो करना जानता हो, किसी भी तमाशे के पीछे में भागना हम लोगों में एक स्वभाव की एक बात होती है कि कोई तमाशाखोर पहुँच जाए तो उसके पीछे हम भागते हैं। फिर 'हजारों' लोग उसके चरणों में जायेंगे। अरे भाई और फिर झूठी झूठी बातें उसके बारे में फैलाना कि उसने इस आदमी को ठीक कर दिया, वो ठीक हो गया, उनको शान्ति मिल गई। इस तरह की गलत फ़हमियाँ। बहुत से लोग कहते हैं कि हम उस गुरू के पास गये थे, हमको शान्ति मिल गई। मैंने कहा कैसी शान्ति मिली आपको, श्मशान शान्ति मिली होगी। अब आप हिल ही नहीं सकते, आपको अशान्ति तो है ही, लेकिन वो अशान्ति जो है वो एकदम जम के पत्थर हो गई। अब आप हिल नहीं सकते ऐसी ही व्यवस्था हो गयी। क्योंकि यह लोग जो धन्धे करते हैं, जिस तरह से यह काम करते हैं, यह आप जानते हैं। हम तो काफी उमर वाले हैं और हम सब जानते थे इसके बारे में। अब तो आप लोग सब younger generation के लोग हैं, शायद आपने जाना ही नहीं होगा कि भानुमती, श्मशान विद्या, प्रेत विद्या, तांत्रिक विद्या अपने देश में बहुत है। इस समय कुछ मुझे लगता है कि दिल्ली के लोगों

का मन तांत्रिकों से कुछ हटा हुआ है, नहीं तो जहां जिस गली में जाइये वहां एक तांत्रिक बैठा हुआ था, इस आपकी राजधानी में। इन तांत्रिकों का शौक आपको भ्रांत हो गया है और इसमें आप फँस गए। ऐसे छोटी-छोटी चीजों के पीछे में भागने वाले लोग परमात्मा को कैसे पायेंगे ? अगर मांगना है, तो कोई परम चीज मांगनी चाहिये। और परम में ही सब कुछ मिल जाता है—क्योंकि श्री कृष्ण ने कहा है कि 'योग क्षेत्र वहाम्यहम्' पहले जब योग होगा, तो तुम्हारा पूरी तरह से क्षेम होगा। कोई महाशय कहते हैं कि "माँ मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी करो।" मेरे पास बहुत से पहलवान आते हैं, कहते हैं "माँ हमें तो कोई शान्ति नहीं।" कोई आदमी कहता है "माँ मेरे पास पैसा नहीं", दूसरा रईस आदमी आता है कहता है "मुझसे तो दुखी कोई दुनिया में है ही नहीं।" इसका मतलब यह है कि सब संसार दुखी है। और इस दुखी संसार में आप अगर किसी को ये सोचें कि दूसरे के पास कोई चीज है तो उससे वो सुखी है, ये आप को गलतफ़हमी है। आप इस पर विश्वास करें कि जिस मनुष्य को आप सुखी समझते हैं वो महा दुखी हो सकता है। लेकिन आपको पता नहीं है। इसलिए जिस चीज को आप मांग रहे हैं उससे आपको सुख नही होने वाला। आप जिस चीज को माँगना है, उसे मांगें और वो है परम्। और वो परम् तत्व आपके ही अन्दर है, जिसको आपको पाना है। इसके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं, किसी की कुछ देने की जरूरत नहीं, कुछ उसमें आम्डबर नहीं, बहुत सीधी सरल चीज है। जैसे कि एक बीज को आप अंकुर ला सकते हैं, यदि धरती माँ के उदर में डाल दें, उसी प्रकार यह कार्य हो सकता है। लेकिन मनुष्य के लिए सीधा-सादा होना भी कठिन हो जाता है। क्योंकि वो सीधे तरह से खाना खाना अब जानता ही नहीं। उल्टा हाथ फिरा के ही वो खाना खाता है। कोई काम सीधे तरीके से करना उसकी बुद्धि के परे हो गया है, उसकी बुद्धि इतनी जटिल हो गई। सोच सोच करके उसका दिमाग खराब हो गया है। इस गुरू के कारण कैन्सर जैसी बीमारी होती है। गलत गुरू के सामने अपनी पेशानी झुकाना। इसलिए किसी ने कहा है कि अपनी पेशानी सब के सामने मत झुकाओ। यहाँ तक की मंदिरों में जब आप जाते हैं, कोई भी आदमी आपको टीका लगा दे। हर एक आदमी से आप अपने माथे पर टीका लगा लेते हैं, बहुत गलत दोष है। किसी का क्या अधिकार है कि वे आपके माथे को छुयें ? आप जानते हैं कि आपने तो कहा कि ६-१० साल मिलन को लागे। मैं तो यही कहती हूँ कि हजारों वर्षों से आपको बना बना कर के आज परमात्मा ने मनुष्य बनाया है। और उसका आप किसी के सामने भी सर झुका देते हैं ? किसी के सामने भी सर झुकाने को हमेशा लोगों ने मना किया है। सिर्फ साक्षात्कारी जो आदमी है वो ही जानता है कि किसके सामने सर झुकाना चाहिए। हम तो कहते हैं कि हमारे भी पैर छूने की आपको कोई जरूरत नहीं। और न छुओ तो अच्छा है। जब तक आप पार न हों, जब तक आप के हाथ में चैतन्य नहीं आया, हम आप के लिए वैसे ही, जैसे दूसरे हैं। जैसे कि आप मंदिरों में जाते हैं वैसे हम यहाँ बैठे हुए हमसे आपको छूने से क्या फ़ायदा ? चरणों में आने का तभी फ़ायदा हो सकता है अगर आपके अन्दर वो connection (योग) शुरू हो गया। अगर हम माइक्रोफोन के सामने बात कर रहे हैं और यह connection (योग) ही नहीं है तो बात करने से फ़ायदा क्या ? इसलिए किसी को भी पैर पे जाना और पैर पे लेना दोनों ही दोष हैं, मैं समझती हूँ। क्योंकि लोग अब बहुत जबरदस्ती करेंगे। अगर किसी से कह दें कि भई पैर न छुए तो उनको तो लगता है कि माँ ने तो जैसे कि उनको शाप ही दे दिया। मैं यह कहती हूँ, बेटे, तुम क्यों छू रहे हो ? तुमको मैंने क्या दिया ? किसलिए मेरे पैर छू रहे हो ? जब तक तुमको कोई भी मैंने आत्मा का परिचय दिया नहीं, तब तक आप मेरे पैर क्यों छू रहे हैं ? मैं भी कोई होंगी हो सकती हूँ, मैं भी

कोई खुद गलत हो सकती है। क्या वजह है कि आप मेरे पैर छूयें ? आदत है। और इस आदत की वजह से हमारा एकादश जो है, हमारे माथे पर जो एक बड़ा भारी चक्र होता है जिसमें ११ रुद्र बैठे हैं। रुद्र जो आप जानते हैं कि संहार-शक्ति हैं। अगर आप किसी और को इस तरह से गुरू मान लें, तो दायें तरफ में आपके रुद्र पकड़ जाते हैं। और जैसे ही पकड़ जाते हैं, ऐसे ही कैन्सर की बीमारी तो पहली चीज़ है। कोई आदमी भी समझो एक politician (राजनीतिज्ञ) है, समझो किसी के आगे बहुत झुकता है। वो भी हो सकता है। एक अगर economics (अर्थ-शास्त्र) वाला आदमी है, या Business (व्यवसाय) वाला आदमी है वो अगर किसी के आगे जरूरत से ज्यादा नत-मस्तक होता है, अपने Business (व्यवसाय) के लिए, वो भी कोई भी आदमी जरूरत से ज्यादा अगर किसी के सामने सिर झुकाए, तो उसको कैन्सर की बीमारी हो सकती है। उसके इधर की जो ५ रुद्र में से पांचों रुद्र पकड़ सकते हैं। इसलिए सब के सामने नतमस्तक होना मनुष्य के लिए बिल्कुल वर्जित है। लेकिन किसी से अकड़ना भी वैसी बात है। कि "मैं ही गुरू हूँ, मैं ही भगवान हूँ, मैं ही सब कुछ हूँ, मैं ही सब कुछ करता हूँ, मुझे कौन बताने वाला है।" ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि तुम ही गुरू हो, और तुम इसे खोजो, दूसरों को खोजने मत दो। तुम ही हो सब कुछ। यह भी बात गलत है। क्योंकि आप मुक्त साक्षात्कारी नहीं हैं। जब तक एक दीप जला नहीं, तब तक वो अपने आप से जल नहीं सकता। एक जला हुआ दीप ही उसे जला सकता है। पर उस में लेना-देना कोई नहीं बनता है। उसमें किसी तरह का स्वार्थ नहीं होता है। किसी भी तरह का उपकार नहीं होता। यह तो आपका दीप जला नहीं और जो दीप जला हुआ उसे छू गया, आप जल गए। उसमें किसी भी तरह की ऐसी बात नहीं आती कि जिसमें आपको पूरी तरह से यह कहना है कि आपका कोई व्यक्तित्व ही न रह जाए कि आप एकदम से पागल जैसे उनके पीछे लगे रहें। अभी ऐसे बहुत से लोग मैंने देखे। स्पेन में ५०,००० लोग ऐसे हैं कि जो एक गुरू महाराज कोई हैं उनके पीछे में इतने नत-मस्तक हैं कि पागल हैं। स्पेन की महारानी हमें मिली थीं। वो कह रही थीं कि "अपने देश ऐसे से ऐसे आप गुरू घण्टाल यहाँ भेजते हैं कि उनका क्या करें ? कुछ समझ नहीं आता। हमारे यहाँ पचास हज़ार युवा लोग एकदम पागल हो गये। इस तरह के न जाने कितने तरह-तरह के लोग आपने बाहर भेज दिये हैं। आपको Export (निर्यात) के लिए और तो कुछ मिला नहीं इस देश में तो बढ़िया से उठा उठा कर ऐसे लोगों को बाहर भेज दिया है कि सबने नाक कटाकर रख दी है। और उनके लिए अगर कुछ कहें तो लोग कहते हैं कि माँ आप तो बहुत intolerant (असहिष्णु) हैं। तो क्या ऐसे लोगों को हम हार पहनायें ? उनकी आरती उतारें और उनको सिहासन पर बिठायें ? पहले जमाने में तो दैत्यों को मारा जाता था। मार के उनकी पूर्ण-तया हत्या कर दी गई। लेकिन अब कम से कम उन को कहा तो जाए कि "ये दैत्य हैं और राक्षस हैं।" उसमें आप लोगों को क्यों इतनी परेशानी हो जाती है ? क्या आप भी उन्हीं के साथ मिले हुए हैं ? दूसरे लोगों को लूटना, खसोटना, उनसे पैसा लेना, उनको दूसरे मार्ग में डालना, यह कहाँ का धर्म है ? और वो भी भारतीय होकरके आपको क्या अधिकार है ? यह एक तरह का अजीब-सा छिपा हुआ aggresion (अत्याचार) है। और यह इस तरह से छाया हुआ है कि आप आश्चर्यचकित होंगे कि एक साहब, लंदन आते हैं और उन्होंने ने कहा मेरे लिए अगर आप Rolls Royce (आलीशान कर) दें तो मैं आऊं। अब सब लड़कों ने एक साल भर सिर्फ आलू खाया, पैसा बचाया और उनको Rolls Royce दी। एक लामा साहब पहुँचे वहाँ—यह लोग आकर मुझे बताते हैं तो मुझे बड़ी हैरानी हुई। लामा साहब, जो कि बहुत साधु सन्यासी बनते हैं, वहाँ पहुँचे तो कहा कि "हमें तो Marble के Floor (संगमरमर का फर्श) के सिवा और कुछ नहीं चाहिये।' वहाँ Marble बड़ा महंगा मिलता है, स्वीडन में।

तो स्वीडन के बिचारे लोगों ने भूखे रहकर उनके लिए Marble का Floor (फर्श) बनाया, तो वो पधारे वहाँ। और पधारने के बाद, यह चीज कि आप उनके सामने जाइये तो एक हजार एक बार आप उनके सामने झुको। मैं आपको इसलिए यह सब बातें बता रही हूँ कि सब चक्कर में आप लोग होते ही हैं। सवेरे दस आदमी मिलने आए। उसमें से नौ उस चक्कर में कि माँ हमें समझ नहीं आता हमने तो गलती नहीं करी। मैंने कहा कि तुम खोज ने क्या गये थे, यह बताओ। जिसने परम की बात की और जिसने परम दिया, उसी के चरण में जाना चाहिए और उसी के शरण में भी जाना चाहिये, बाकी सब बेकार है। ये बातें जो हैं— बातों से तो इन्सान का दिमाग खराब हो जाता है। आपने सुना होगा बहुत से लोग वेद पर बात करते हैं। वेद, वेदाचार्य, यह वो। एक महाशय बम्बई में है, बड़े भारी वेदाचार्य हैं। पंडितों के पंडित वो उमर में हमसे छोटे हैं। लेकिन वो जब बात करते हैं तो ऐसा लगता है कि सठिया गए हैं। जो बकते चले जाते हैं, ऐसे बकते चले जाते हैं कि कोई उनके पास पाँच मिनट खड़ा होना नहीं चाहता। अब उनको समझ नहीं आता कि लोग उनसे भागते क्यों हैं? इस कदर क्रोधी और तापमय इन्सान हैं, कि जो भी उनके पास बैठता है कहता है, "बाप रे बाप यह तो एकदम तूफान आ गया।" और गुस्सा उनको इतना आता है कि अगर उनकी बात किसी को समझ नहीं आई तो कहते हैं कि तुम तो ऐसे दुष्ट हो, तुम तो ऐसे खराब हो; और लेकर मारना शुरू कर देते हैं। अब बताइये इतने वेदाचार्य और फलाने ढिकाने होते हुए उनके यह सारा बाहर ही रह गया है। कुछ उनके हृदय में कुछ नहीं गया। न उनमें दया, न अनुकम्पा, न कुछ, बस बड़बड़ाते रहते हैं सुबह-शाम। ऐसे मैंने फ्रांस में बहुत से देखे। वो तो बस में चढ़ते हुए बड़बड़ाते हैं। पूछा क्या, तो क्या कहने लगे कि ये बड़े भारी पादरी थे। मैंने कहा वाह भाई, यह पादरियों का अन्त। एक बड़े भारी पादरी थे इसलिए हम उन को कुछ कहते नहीं बस बड़बड़ाते चलते हैं सुबह से शाम तक। ऐसे बहुत मिलते हैं फ्रांस में। मेरे ख्याल से वहाँ इस तरह के प्रकार बहुत हो चुके हैं। लोगों ने बहुत अध्ययन, अध्ययन करके। तो इस तरह कि गुरू हों कि जो सिर्फ बातचीत हो बातचीत करें। आपको कहेंगे पचास पारायण करो। दत्तात्रेय का आप पारायण करो। गुरू का आप पारायण करो। पचास पारायण करने के बाद में मिला क्या? एक महाशय हमारे पास आए, हमसे कहने लगे माँ हमने तो चौदह वर्षों की तपस्या की। मैंने कहा "अच्छा, और?" "उन्होंने सिर्फ पारायण करने को कहा और शिवजी का मन्दिर धोता रहा।", "और अब क्या हुआ।" कहने लगे "एक मिनट में कुण्डलिनी जागरण हुआ।" तो मैंने कहा, "भाई यह सोचना चाहिये, पारायण करने से परमात्मा मिलता है तो अपने देश में तो कितने लोग हैं जो पढ़ भी नहीं सकते। इसका मतलब कि उनको परमात्मा नहीं मिलेगा? सिर्फ पढ़े लिखे लोगों को मिलेगा? जो वेदाचार्य हैं, उनको मिलेगा? जो वेद पढ़ सकते हैं, संस्कृत जानने वाले कितने लोग हैं? मैं कहती हूँ, कुरान-शरीफ़ पढ़ने वाले कितने लोग हैं? या बाईबिल पढ़ने वाले कितने लोग हैं? मतलब जो पढ़ते नहीं वो काम से गए। ऐसे कैसे हो सकता है? जो परमात्मा है, सबका ही निर्माण करने वाला है, सबको ही प्रेम करने वाला है, वो कभी ऐसे काम करेंगे?" इसलिए जो गुरू-तत्व में खराबी आ जाती है उससे आप सब बचकर रहिए। और यह गुरू तत्व हर तरह से आपके अन्दर एक हद, एक तरह की सीमा बाँध देता है। "कि हम यह करके दिखायेंगे।" उन्होंने कहा ४ दिन का उपवास। बस हम करके दिखायेंगे। यह सब चीजों से परमात्मा नहीं मिलता है। सहज-सरल। सहज समाधि लागे। सहज। सहज होना चाहिए। जो चीज सहज नहीं है जिसमें असहज है, वो परमात्मा की चीज हो ही नहीं सकती। एक सीधी बात आप सोचिये कि आप इन्सान बने, आपने कौन सी मेहनत करी? आप क्या सिर के

वल खड़े हुये, कि आपने क्या अपनी दुमें काटीं थीं ? किस तरह से आप बन गए ? आप इन्सान अपने आप सहज सरल बन गये। इसी प्रकार ऊंची स्थिति में जाने के लिए भी 'सहज' ही भाव होना चाहिए। और जब तक सहज भाव नहीं आता है तब तक आप जो भी ऐसी ऊट-पटांग चीजें करते हैं उससे आपको नुकसान होगा, तकलीफ़ होंगी, चक्र पकड़ेंगे, आपको परेशानी होगी—चाहे वो शारीरिक हो, मानसिक हो, या बौद्धिक हो, मगर आप परेशानी में फँस जायेंगे। इसलिये मैंने पहले ही कहा सहज भाव से बैठें और कहा कबीर को गाओ। क्योंकि कबीर सहज भाव में गाते थे। उनका मिलन हो चुका था, इसलिए वो मिलन में गाते थे।

अब यह जो नाभि चक्र है इसमें एक दफ़ा तो यह हुआ कि जहाँ आपने किसी को भी गुरू मान लिया ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा जिसे कहते हैं कि किसी को भी गुरू मान लें। गलत आदमी को गुरू मान लिया। गलत चीजों में सिर झुका लिया।

दूसरे ऐसे होते हैं कि जो किसी को मानते ही नहीं। भगवान को भी नहीं मानते। "मैं ही सब का गुरू है।" तो बायें ओर के पांच रुद्र हैं वो पकड़ जाते हैं। इस प्रकार के दो प्रकृति के आदमी होते हैं। अब जो किसी को नहीं मानते, जो बड़े भारी वेदाभ्यास करने वाले हैं, इनके बारे में मैंने आपको वर्णन कर ही दिया कि किस तरह के होते हैं। और उनके जो प्रभूति होती है इस कदर घनी-भूत तरीके से, क्रोधी होती है कि इस आदमी के पास भगवान हो ही सकता है, ऐसा कोई भी विश्वास नहीं करता। भगवान इनके पास से गुजर सकते हैं, ऐसा भी कोई नहीं विश्वास कर सकता।

परमात्मा जो है, वो प्रेम का, आनन्द का, सौख्य का और अनुकम्पा का सागर है, क्षमा का सागर है। जिस आदमी में इस कदर क्रोध, इस कदर सब के साथ ये तृष्णा है, वो आदमी कभी भी परमात्मा का आदमी हो नहीं सकता।

अब, भवसागर के बीच में जो विष्णु का तत्व है इसके बारे में मैं जरूर आपको बताना चाहूँगी। क्योंकि अपने देश में हर एक जगह जाइये तो लोग मुझसे ऐसे कहते हैं कि माँ हमारी गरीबी का क्या होगा ? जैसे कि इन लोनों ने कुछ गरीबी का ठीक ही किया होगा जो मुझसे कहते हैं कि गरीबी का क्या होगा। वही बात हुई "कृष्ण ने कहा कि 'योग क्षेम वाहम्यहम'—पहले योग को प्राप्त हो, उसके बाद आपका मैं क्षेम करूंगा। जिस जिस गाँव में सहजयोग हुआ, जहाँ-जहाँ हम गये, जिन्हों ने योग पाया, उनके सब प्रश्न solve (हल) हो गये। किस प्रकार ? सबसे पहले तो सारी गन्दी आदत छूट जाती हैं; धर्म जागृत हो जाता है। मनुष्य के अन्दर की जितनी भी आदतें हैं, जिससे मनुष्य जकड़ा हुआ है वो सारी ही एक साथ टूट जाती हैं। आप जानते हैं कि बता रहे थे। कि २०० आदमी हमारे साथ परदेश से घूम रहे थे, इन लोगों में से न जाने कितने Drug (मादक द्रव्य) लेते थे, कितने alcoholics (शराबी) थे, कितने कैसे कैसे थे। हम तो कुछ देखते नहीं। जो आया उसे पहले पार करो। पार होने के बाद धर्म जागृत हो गया। एक महाशय थे वो बहुत शराब पीते थे। फिर सहजयोग में आते ही दूसरे दिन से उनकी शराब छूट गई। एकदम शराब छूट गई। तो एक बार जर्मनी गये थे, उन्होंने कहा कि देखें कैसा क्या है। उनको एक शराब बहुत पसन्द थी। पीने के साथ कहने लगे ऐसी उल्टियां हुई, और उसमें से ऐसी गन्दी बदबू आने लग गई कि हमने कहा कि यह क्या Molasses पी रहे हैं कि क्या 'कार्क' पी रहे हैं, और समझ ही नहीं आ रहा कि क्या पी रहे हैं ? और उल्टी पर उल्टी, उल्टी पर उल्टी। उससे इतनी घृणा हो गई। हमने तो कुछ नहीं पिया। हम तो वहीं लन्दन में बैठे हुये थे।

लेकिन आप ही स्वयं धर्म हो जाने के वजह

से क्योंकि यह आपके अन्दर दस गुरू जागृत हो जाते हैं जो साक्षात् धर्म हैं। इसकी वजह से अपने आप ही गन्दी आदतें छूट गई। फिर उसके बाद, गन्दी आदतें छूटने के बाद में आपकी दृष्टि वहाँ जाने लगी कि जिससे आपको लक्ष्मी का है। जैसे एक महाशय—आपको विश्वास इस बात का भी होना जरा कठिन है लेकिन आपसे बतायें—एक हमारे पहचान के थे उन्होंने हमें बताया कि "माँ जब से मैं सहजयोग करने लग गया है बड़ा चमत्कार हुआ।" मैंने कहा क्या हुआ? कहने लगे कि 'जिस जमीन पर मैं ऐसे टहलता था, उसकी मिट्टी इतनी बढ़िया हो गयी कि एक आदमी आकर मुझसे कहने लगा कि भई किसी फ़कीर ने आकर हमसे बताया कि यहाँ की मिट्टी थोड़ी-सी लेकर के अगर तुम ईंटें बनाओ तो पत्थर जैसी हो जायेंगी। तो वो हमारे यहाँ आया और हमसे तो बिल्कुल तोल कर मिट्टी ले जाता है।" लेकिन पहले जागृति होनी चाहिये, लक्ष्मी तत्व की। लक्ष्मी तत्व की जागृति किये बगैर, अगर आप चाहें आपके अन्दर लक्ष्मी आएगी तो नहीं। पैसा आ जायेगा। पैसा आ जाएगा, पर लक्ष्मी जी नहीं आयेंगी। और लक्ष्मी जी कैसी होती हैं? एक हाथ से उनके दान है। एक हाथ से उनका आश्रय है, और हाथ में दो कमल के सुन्दर पुष्प हैं, जो कि उनके प्रेम के प्रतीक हैं, और इतना ही नहीं एक-भँवरा जिसके अन्दर इतने काँटे हैं, उसे तक वो अपने अन्दर समा लेती हैं।

ऐसी लक्ष्मी पति आप हो सकते हैं जो समाधान में, इतने सन्तुलन में खड़ी हैं। वो कमल पर ही खड़ी रहती हैं इतनी सादगी से, इतनी dignity (मर्यादा) से वो रहती हैं। मैं तो बहुत आजकल देखती हूँ कि जो पैसे वाले हैं उनके अन्दर कोई dignity ही नहीं। उनके अन्दर दिखाई नहीं देता है कि इनके अंदर कोई प्रतिष्ठा हो। बिल्कुल अप्रतिष्ठित तरीके से इस तरह से करते हैं कि समझ में नहीं आता कि इतनी चापलूसी करने की इनको क्या जरूरत है जब इनके पास लक्ष्मी का प्रसाद है? पर लक्ष्मी का प्रसाद नहीं, सिर्फ पैसा है। गले के ऊपर आप अगर नोट लगा दीजिए तो क्या वो लक्ष्मी पति हो जायेगा? तो ऐसे पैसे वाले से वो लक्ष्मी पति, जो अपने 'शान' में अपने 'गौरव' में खड़े रहते हैं। जो किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते। जब है, तब बाँटते ही रहते हैं। ऐसे हमने अपनी आँखों से लोग देखे हुये हैं। ऐसे हमने जाने हैं लोग जो होते हैं। स्वयं हमारे पिता इस तरह के थे। उनकी इतनी दानी प्रवृत्ति थी कि वो सवेरे हर इतवार को चीजें बाँटा करते थे। किसी दिन कंबल बाँट दिया, किसी दिन कुछ। और उनकी आँख हमेशा नीचे रहती थी, और देते रहते थे। देते रहते थे। लोग दो-दो ले जायें, तीन-तीन ले जायें तो कोई क्या उनसे कहें कि 'क्या कर रहे हैं आप? और दो-दो तीन-तीन कंबल आदमी लिये जा रहे हैं, आँख क्यों नीची की है?" कहते "भई मैं दे नहीं रहा हूँ, दे कोई और रहा है। इसलिये मुझे शर्म लगती है। सब लोग कहते हैं आप दे रहे हैं।" ऐसे तो बड़े स्वतन्त्र वीर थे, लेकिन वो इस मामले में उन्हें शर्म लगती थी। कि लोग मुझसे कह रहे हैं, मुझे बड़ी लज्जा आती है, लोग मुझे कह रहे हैं कि दे रहे हो तुम और देते वक्त में कहने लगे "देने वाला जो वो जाने, मुझे क्या करने का है। मैं तो बीच में खड़ा हुआ हूँ।" ऐसे लोग थे पहले इस भारत में। अब तो पता नहीं कुछ दिखाई नहीं दे रहा इस तरह का तरीका। पैसे वाले का मतलब तो यही हो गया कि बहुत घमण्डी, बहुत क्रूर और किसी की परवाह नहीं। अपनी माँ-बाप की परवाह नहीं, अपने भाई बहनों की परवाह नहीं, अपने का बहुत सब कुछ समझना। यह पैसे वाले के लक्षण हैं। दुनिया में किसी की भी परवाह नहीं करना। यह जो हमारे यहां अब पैसे का भूत सवार हो गया है, इस भूत से हमारी जो समाज-व्यवस्था है पूरी तरह से टूट जायेगी। औरतों के लिये भी अब यह हो गया है कि पति से बढ़कर के पैसा, उनकी, बच्चों से बढ़कर के पैसा हो गया। हर

चीज में पैसा। जहाँ पैसा मुख्य हो जाता है और प्रेम नगण्य हो जाता है, वहाँ लक्ष्मी का स्वरूप खत्म हो जाता है। वहाँ सब लक्ष्मी का स्वरूप खत्म हो जाता है। और उस जगह सिर्फ पैसे का एकदम 'रूखा' जीवन आ जाता है जो आज आपको परदेश में दिखाई देता है। यहाँ से भी हिन्दुस्तानी परदेश में जाते हैं उनको पता नहीं क्या हो जाता है, सारी परम्परा टूट करके वो बेतहाशा पैसे के तरफ दौड़ते हैं। मैं तो उन लोगों को देखकर के हैरान होती हूँ कि यह क्या मेरे देश के लोग हैं?

इस तरह से जब हम अपने को गलत रास्ते पर डाल देते हैं, तब उस पर बहुत जोर का मार आता है। ऐसे पैसे वालों को बहुत बुरे दिन भी देखने पड़ते हैं। उनके बच्चे, जो वाहियात निकल जाते हैं, इधर उधर दौड़ जाते हैं और गलत काम करते हैं। ऐसे पैसे वालों के लिए कोई भी आशीर्वाद नहीं होता। आप जाकर देखिये, रात रात भर सोते नहीं। उनको परेशानियाँ हैं। तो जो पैसा लक्ष्मी स्वरूप है, उस पैसे को आप प्राप्त करो। उस सम्पत्ति को, उस धन को आप प्राप्त करते हैं, जो लक्ष्मी की देन है जब आपके अन्दर कुण्डलिनी जागृत होती है। और इसलिए इस देश का जो दारिद्र है, उसी दिन दूर होगा जब यहाँ पर लोग योग को प्राप्त हों। उससे पहले कभी नहीं हो सकता; आप कोशिश कर लीजिये।

मैं गई थी, राहुरी में, मैंने देखा कि खूब झोपड़ियाँ बनी हुई थीं। कहने लगे, यह झोंपड़ियाँ बनाई। मैंने कहा "अच्छा।" कोई नगर बनाया गया है। मैंने कहा, यह नगर कैसा? पता नहीं। वहाँ से जा रहे थे तो सामने रास्ते पर लोग खूब शराब पी-पी करके आकर धड़ाधड़ गिर रहे थे। एक तो हमारे मोटर के सामने गिर गया। और एक नहीं, दो नहीं, काफ़ी सारे लोग वहाँ से निकले जा रहे थे। मैंने कहा, यह कौन सा नगर बनाया? यह कहें यह झोंपड़ियों का नगर बनाया, इसमें सिर्फ शराब ही चलती है? कहने लगे, हाँ "यह तो ऐसे ही नगर हैं।" उनको झोंपड़ी दी तो उसमें शराब शुरू कर दी, और १०० रुपये दे दिये तो उस ने शराब शुरू कर दी। यह कोई गरीबी हटाने का लक्षण नहीं दिखा। इस तरह से गरीबी नहीं हटेगी। यह तो शराब ऐसे पीछे पड़ गयी कि इस में से ५० फीसदी गरीब मर ही जायेंगे, तो गरीबी मिट ही जायेगी। इलाज तो ऐसा ही हो रहा है कि लोग जीने ही नहीं वाले। रास्ते पर ऐसे धड़ धड़ गिर रहे थे, उनमें कोई ताकत नहीं थी। क्षीण-हीन ऐसे हुये लोग। इनकी गरीबी आप क्या हटा सकते हैं? इनको तो पैसा वो सब देने से इन्होंने शराब पी-पी करके और धन्धे कर-कर के और अपना सर्व-सत्यानाश कर लेना है।

अब गरीबी हटाने पर एक और प्रश्न है कि जब हम इस तरह की तांत्रिक विद्या और ऐसी मैली विद्या करते हैं तो लक्ष्मी जी दूसरे पैर से चली जाती हैं। जिस घर में तांत्रिक विद्या शुरू हो जायेगी, लक्ष्मी जी दूसरे पैर से चली जायेंगी। आज मैं विशेषकर धर्म पर बात कर रही हूँ क्योंकि यह जानना बहुत जरूरी है कि हम धर्म में कितनी गलतियाँ करते हैं। जो लोग अपने घर में दिवाली मनाते हैं, हर जगह दीप जलाते हैं रात को क्योंकि बाहर रात्रि थी। उस वक्त यह न हो कि लक्ष्मी कहीं लौट के चली जाये। उनको अन्धेरा पसन्द नहीं। और जितनी मैली विद्या, जितनी भूत विद्या, प्रेत विद्या, श्मशान विद्या और यह दुष्ट गुरूओं का जो चक्कर है चला, जो अगुरु लोग जो हैं, इन्होंने जो चक्कर चलाए हुये हैं, इन्हीं सब चक्करों के वजह से अपने देश में बिल्कुल कालिख पुत गई है, एकदम काला अन्धकार हो गया है। और वो काला अन्धकार होने के वजह से अपना देश उठ नहीं पाता। जब तक इन लोगों को आप समुद्र में नहीं डाल दीजिएगा, जब इनको आप अपने हृदय से निकाल नहीं दीजियेगा और इस तरह की चीजें जब तक आपके समाज से जायेंगी नहीं आपके समाज की गरीबी कभी हट नहीं सकती

निर्मला योग

क्योंकि लक्ष्मी जी ऐसे स्थान में बसती नहीं ।

तीसरी चीज जिससे लक्ष्मी जी हमारे देश में नहीं है, उसका मुख्य कारण यह है कि **"यत्र नारिया पूज्यंते तत्र रमंते देवता"** माने यह कि जो इन्सान स्त्री की पूजा करता है, स्त्री को मानता है, उसकी इज्जत करता है, वहां देवता का रमण होता है। लेकिन स्त्री भी पूज्यनीय होनी चाहिये। स्त्री भी ऐसी हो कि जिसकी पूजा न की जाए, तो ऐसी स्त्री से फ़ायदा क्या ? तो स्त्री ऐसी होनी चाहिये जो पूजी जाए। जो पूज्यनीय हो, जो पवित्र हो। जो उच्च विचार लेकर के संसार में आये। प्रेम से अपने घर और रिश्तेदार और सबको सम्भाल के रखे। ऐसी जो स्त्री हो, जो पूजी जाये, ऐसी स्त्री के पति जो हों उसकी इज्जत करें, घर वाले उनकी इज्जत करें। स्त्री की, बच्चों की, लड़कियों की, माँ की, जहाँ इज्जत होती है वहां देवता रमण करते हैं। नहीं तो भूतों का नाच शुरू हो जाता है। अब आप सुन रहे हैं कि अपने देश में स्त्री की क्या स्थिति है। मैं तो तब भी कहूँगी कि हिन्दुस्तान की नारी एक विशेष स्वरूप की औरत है। जिसने बहुत कुछ सहन किया। पुरुषों की ज्यादती जितनी हिन्दुस्तानी नारी सहन करती है और कोई नहीं सहन करता। और अपना समाज ही पूरा ऐसा बन गया है कि आज बिल्कुल हम लोग इस मामले में निर्लज्जता से बात करते हैं। कोई कहता है कि "साहब इतने लाखों रुपये dowry (दहेज) में दीजिए और नहीं तो आपको हमारे दरवाजे में प्रवेश नहीं।" बिल्कुल उन लोगों को इस मामले में शर्म भी नहीं आती, इस तरह की बात करने को। और इस तरह की चीजें इतनी हमारे समाज में आज प्रचलित हो रही हैं। जितनी जितनी ये बढ़ती जायेंगी उतनी उतनी आपके देश में गरीबी आयेगी। किसी लड़के को बेचकर के और लड़की के नाम पर अगर आपने रूपया इक्कठा किया, आप देखिये लीजिये उसमें कभी भी आपको यश नहीं आयेगा। आप करके देख लीजिये कोई आदमी लाखों रुपया इस तरह से ले ले उसको कोई न कोई घाटा आएगा, कोई न कोई बड़ी बर्बादी होगी और वो ऐसी दशा में पहुँच जाएगा कि जहाँ से निकल नहीं पायेगा। या तो कोई ऐसे बीमारी में फँस जाएगा या ऐसे कोई बेकारी में फँस जायेगा। कोई न कोई ऐसी चीज उसे मिल जाएगी कि जिससे वो पछताएगा। क्योंकि किसी भी सती स्त्री, किसी भी स्त्री जाति का अपमान करना शक्ति का अपमान है। अगर वो स्त्री इसी तरह की है कि जो बेकार है और वो पूज्यनीय नहीं है, उसके बारे में मैं नहीं कह रही। पर अपने भारतवर्ष में आज मैं जरूर कहूंगी कि यहाँ की स्त्री बहुत पूज्यनीय है। अब भी औरतें हमारे यहाँ glamour (चमक-दमक) वगैरह में विश्वास नहीं करतीं। अब हैं कुछ पागल, उनको छोड़िये। लेकिन अधिकतर औरतें सादगी से, अपने चरित्र को सम्भालते हुए रहती हैं। जिस देश में पद्मनी जैसे लोगों ने जौहर किये—कोई विश्वास नहीं करता। अगर परदेश में जाकर मैं कहूँ कि हमारे देश में तो chastity (पवित्रता) के पीछे औरतों ने जौहर कर दिया तो कहते हैं यह हो ही नहीं सकता है। मैंने कहा तुम क्या समझोगे, उस ऊँची चीज को तुमने जाना नहीं। उन आदर्शों को तुमने जाना नहीं।

आज उन आदर्शों को सब को छोड़ के और हम इन पागलों के पीछे अगर भागना शुरू कर दें तो मैं आपसे बता रही हूँ कि गरीबी जो नहीं आनी थी, वो आ जायेगी। और इन लोगों में क्या कम गरीबी है ? आप इनको समझते हैं रईस हैं ? मैं तो समझती हूँ इनसे गरीब कोई नहीं। इनके अगर घर जाइयेगा और एक कप चाय दिया तो उनका दिल बैठ जायेगा। अगर एक कप चाय उनके घर से खर्च हो गया तो उनका दिल बैठ जायेगा। और हम लोग दिलदार हैं। गरीब भी हैं तो भी हमारे

घर में कोई आता है, तो उसे चाय पानी कुछ न कुछ, कुछ नहीं है तो गुड़ ही, खाने को दे देंगे। जो भी घर में है, जो हो अपने हृदय से निकालकर। हमारे साथ लोग सफ़र कर रहे थे देहातों में। हैरान थे, कि लोग झोपड़ियों में रहते हैं मगर उन का दिल है कि राजा जैसे। और यह लोग महलों में रहते हैं और ये हैं बिल्कुल भिखारी। मैं तो रोज के अनुभव लन्दन में देखती है कि जितने भी विदेशी लोग हैं बड़ी-बड़ी position (पद) में हैं, बड़ी-बड़ी इस में हैं। आप उनको कितने भी presents (उपहार) दे दीजिये, कुछ भी कर दीजिये, उनसे एक पैसा नहीं निकलेगा। हमारे साहब की सेक्रेट्री है, वो साहब से कहती हैं कि "आपके grand children (नाती) आ रहे हैं, तो आप परेशान नहीं उन्होंने कहा क्यों ? "आपका सारा घर गन्दा हो जाएगा।" उन्होंने कहा यह किसके लिए घर है। यह क्या मेरे लिए घर है ? यह तो उनके लिए घर है जो मेरे बच्चे आये हैं। उनका यह था कि कहती हैं "जो हमारी grand mother थीं जब तक दो पैंस हमसे नहीं लेती थीं हमको टेलीफोन नहीं करने देती थीं।" और उसी लन्दन शहर में आप आश्चर्य करेंगे, कि दो बच्चे हर हफ्ते में मारे जाते हैं। तो ऐसे देश की affluence (धन-सम्पत्ति) से भगवान बचाये रखें।

आप लोग उस ओर जाने की कोशिश न करें। जो कुछ है उसमें समाधान से परमात्मा को दृष्टि देकर के अपने लक्ष्मी तत्व को आप जागृत करें। इस देश का लक्ष्मी तत्व बिल्कुल जागृत हो सकता है, पर सौष्ठव और उनका गौरव समझते हुए। अगर हम उसको न समझें और व्यर्थ की चेष्टाओं से, चाहें कि लक्ष्मी इक्कठा कर लें, तो कभी भी हमारे अन्दर लक्ष्मी तत्व जागृत नहीं हो सकता। यह ही अपने देश का कर्मोपाय है, कि अपने धर्म में जागृत हों। यह हमारे देश के लिए एक ही तरीक़ा है।

इतना ही नहीं, लेकिन जब ऐसा होगा—और होगा ही, क्यों नहीं होगा ?—उस वक्त सारी दुनिया के देश आपके चरणों में लोटेंगे और जानेंगे कि असली श्रीवन्ती जो है, असली रियासत जो है वो इस देश में है। अब भी लोग देखते हैं तो आँखें खुल जाती हैं कि कहते हैं कि "इतने गरीब लोग साफ़ लोटा माँझकर के उसमें दूध लेकर के आ गये। हमें देने के लिये।" यह लोग विश्वास नहीं कर सकते कि इतने बड़े हृदय के लोग इनके देहातों में कैसे रहते हैं।

सो उस चीज को खोना नहीं है। और ये समय ऐसा आया है कि हम खो रहे हैं। हमारे बच्चे बिगड़ रहे हैं, और उस ओर हम जा रहे हैं। इस वक्त बहुत जरूरी है कि सहजयोग की स्थापना करके और अपने बच्चों को रोक लीजिये। उनके अन्दर लक्ष्मी तत्व जागृत करके उनके अन्दर यह गौरव भर दीजिये।

आज मैंने आपसे विशेष करके लक्ष्मी तत्व पर बात की है, क्योंकि ये बहुत जरूरी चीज है। आप लोग जानें कि हमारा देश गरीब क्यों है ? और इसकी गरीबी आप गरीबों को रूपये देने से नहीं होगा। आप देकर देखिये। आप किसी भी गरीब आदमी को सौ रुपया दीजिये। न वो शराब अड्डे पे गया तो कहाँ जाएगा। कोई भलाई नहीं। इसलिए आप जान लीजिये कि पैसे को झेलने के लिए भी लक्ष्मी तत्व जरूरी है। ऐसे ही रईस लोगों को भी सोचना चाहिए कि पैसा जो है वो परमात्मा ने हमारे लिए दान के लिए दिया है। हम बीच में एक माध्यम बने खड़े हुए हैं, और उसको दान के लिए दिया हुआ है। इसका जो कुछ शुभ कर्म हो सकता है वो करना है और इससे जो भी लोगों की मदद हो सकती है, वो करना चाहिए और अच्छे मार्ग में, सन्मार्ग में रहना चाहिए। अच्छे काम करने चाहिए। सबसे बड़ी चीज है परमात्मा का आशीश। जब तक उसका आशीश नहीं मिलेगा, सब चीज व्यर्थ है। उसमें कोई शोभा ही नहीं है। ऐसे घर में जाओ तो आपकी टाँगे टूटने लग जाती

हैं। आपको लगता है "कब भागें इस घर से।" उनका खाना खाओ तो आपको उल्टी हो जायेगी। कोई न कोई तकलीफ़ हो जायेगी। ऐसे लोग जो बिल्कुल ही पैसे से जुटे हुए हैं मशीन बन जाते हैं। उनके अन्दर कोई हृदय नहीं है। वे लोग सोचते हैं हमारे घर में कुछ भी नहीं है, हम भूखे रह जायेंगे। ऐसे लोगों के घर का खाना न लीजिये।

मनुष्य को यह जान लेना चाहिए कि हमारे अन्दर परमात्मा ने स्वयं साक्षात् लक्ष्मी का स्थान रखा है। वो हमारे अन्दर बसी हुई हैं। सिर्फ उनको जागृतमात्र करना है। और उस जागृति के लिए आपको बुद्धि के कोई घोड़े दौड़ाने की जरूरत नहीं, कोई विशेष सोचने की जरूरत नहीं। सिर्फ कुण्डलिनी का जागृण होते ही यह कार्य हो सकता है। तो इसे क्यों न करें? और इसे करना नितान्त आवश्यक है। और यह होने का समय आ गया है। एक विशेष चीज़ है कि यह विशेष समय आ गया है और इस विशेष समय पर आप इस वक्त उपस्थित हैं। इसका आप पूरी तरह से उपयोग करें और अपने लक्ष्मी तत्व को पहले जागृत कर लें।

JAGANNATH SURENDRA KUMAR

132 Bapu Street,
FIROZABAD-283203

WHOLESALE DEALER IN

ALL KINDS OF PAPER

नव वर्ष १९८४

दिल्ली आश्रम, ३-१-८४

हर साल नया साल आता है और पुराना साल खत्म हो जाता है। सहजयोगियों के लिए 'हर क्षण एक नया साल है', क्योंकि वो वर्तमान में रहता है। न तो वो भविष्य में रहता है, और न ही वो बीते हुए भूत-काल में रहता है। हर क्षण उसके लिए एक नया साल आता है, एक नई उमंग है, एक नई लहर है।

जैसे कि समुद्र पर तैरते हुए हर क्षण कोई समुद्र के प्यार से उछाला जाय, उसी प्रकार हरेक सहजयोगी को आनन्द, प्रेम, शान्ति का आह्लाद मिलते रहता है। बस बात ये है कि क्या हम तैरना सीख गये हैं या नहीं। सहजयोग में जिसने तैरना सीख लिया वो आनन्द में ही तैरता है, आनन्द के सागर में तैरता है। सहज योग में अगर कोई दोष है या त्रुटि है, तो इतना ही है कि पार होने के बाद बनना पड़ता है। बगैर बने सहज योग हाथ नहीं लगता। मां ने आपको पानी में उतार दिया लेकिन तैराक बन करके भी आपको सीखना होगा कि आप दूसरों को कैसे तैरा सकते हैं, दूसरों को कैसे बचा सकते हैं, दूसरों को तैरना कैसे सिखा सकते हैं। आपको पूरी तरह से बनना पड़ता है। और यही अगर एक त्रुटि है, तो सहजयोग में है। लेकिन वो अनेक त्रुटियों को भरता है।

जैसे पहले गुरू लोग आपकी शान्ति और आनन्द की व्यवस्था नहीं करते थे। पहले तो वो आपसे मेहनत कराते थे "मेहनत करो" सफाई कराते थे, मन की शान्ति उससे पहले मन की शुद्धता करो। शारीरिक सुख से पहले शरीर को काफी तकलीफ दो। बहुत तपस्या के बाद लोग परमात्मा को पा सकते थे, और इस चैतन्य को, जो आपने सहज में पाया है, उसे जान सकते थे।

लेकिन माँ की व्यवस्था और है कि पहले चैतन्य को पा लो, जान लो कि परमात्मा है, उस पर विश्वास करो जो अन्धविश्वास नहीं है, सत्य के रूप में। और अब 'थोड़ी सी' मेहनत से भी बहुत बड़ा काम हो सकता है। जैसे कि किसी को पहले सिखाया जाये कि देखो पानी से डरना नहीं। लैक्चर दिया जाए। पहले तुम अपने को जमीन पर ही तैरा के देखो। वहीं पर हाथ मारो दो-चार। और काफी दिन से मेहनत की जाए और फिर धीरे-धीरे पानी में लाया जाए। जैसे पानी देखा फिर भाग गए।

और एक होता है पानी में ढकेल दो, फिर सिखाते रहेंगे। इसी तरह आप लोग आनन्द के सागर में धकेल दिए गये। अब इसका मजा उठाना है तो थोड़ा सा कष्ट उठाना पड़ेगा। और वो कष्ट ऐसा है आपको बनना होगा। बने बगैर नहीं होता।

सहजयोगी उसे कहना चाहिए जिसमें पूरा समाधान हो, जिसने पा लिया, जिसकी शुद्ध इच्छा पूरी हो गयी। क्योंकि कुण्डलिनी शुद्ध इच्छाशक्ति है। जिसकी शुद्ध इच्छाशक्ति पूरी हो गयी, जिसकी

शुद्ध इच्छा शक्ति ने पूरी तरह से अपना चमत्कार दिखा दिया, फिर कोई इच्छा ही नहीं रह गयी। जो आदमी पूरी तरह से समाधानी ही हो गया, वो असल में सहज योगी है। कोई सा भी असमाधान बचा हुआ है, इसका मतलब कुण्डलिनी का जागरण ठीक से नहीं हुआ। अभी तक आप पूरी तरह से सहजयोगी बने नहीं।

बड़े आश्चर्य की बात है, कि बगैर सहजयोगी बने हुए भी आशीर्वाद आते ही रहते हैं, चमत्कार होते ही रहते हैं, लाभ होते ही रहते हैं, आप जानते रहते हैं कि "हम चल रहे हैं, ठीक हो रहा है, मामला बन रहा है। और हम अग्रसर हो रहे हैं।"

लेकिन सहजयोगी का सबसे बड़ा आशीर्वाद ये है कि उसमें देने की क्षमता आ जाती है, वो देता है। और देता ही नहीं है, उस देने का जो आनन्द है, जो कि बहुत ही अनूठा आनन्द है उसे वो भोगता है। वो आनन्द आप किसी सांसारिक चीजों से कभी पा ही नहीं सकते। और सारे जितने blessings (वरदान) वगैरह हैं इसे किसी से आप पा नहीं सकते। सबसे बड़ी blessing है कि आपकी अपनी गुरू शक्ति बढ़ जाए और आप में ये क्षमता आ जाए कि आप दूसरों को दे सकें। ये जिस दिन क्षमता आप में आ गई, बस फिर समझ लीजिए, कि माँ का काम तो पूरा हो गया और आपका काम शुरू हो गया। ऐसी जब तक दशा नहीं आती तब तक मेहनत करनी होगी और बनना होगा। यही एक सहजयोग की त्रुटि है जिसे एक माँ के रूप में मैं कहती हूँ कि मैं पूरी कोशिश करती हूँ कि अपनी तरफ से कोई ऐसी कमी न रह जाए। बहुत कुछ करती हूँ, कि अपनी तरफ से कुछ न रह जाए, कि मेरी किसी बात की वजह से मेरे बच्चों में कमी रह जाए।

लेकिन आपकी भी तपस्या जरूरी है। उसके बगैर काम नहीं होगा। पर जो तपस्या का स्वरूप उग्र है या संतप्त है, ऐसा नहीं है। 'शान्त' तपस्या है। इसमें कोई कठिन तपस्या नहीं है। कोई मेहनत की तपस्या नहीं है।

तो पहली तो चीज़ सहजयोगियों को प्रेम करना सीखना चाहिए। सबसे बड़ी चीज है। जैसे मैं किसी के लिये शिकायत सुनती हूँ, कि ये सहजयोगी, आप तो कहते हैं कि सहजयोग बड़ी अच्छी चीज है, अपनी माँ को ही ill-treat (दुर्व्यवहार) करते हैं। उनकी बीवी की बात चलती है। वो अपनी बहन को पीटते हैं, अपनी बीवी को मारते हैं। कोई है, अपने पति का ध्यान नहीं करते। बच्चों की तरफ ध्यान नहीं है। सहजयोग में ये तो 'अनायास ही' हो जाना चाहिए। 'अनायास' ही सब घटित होता है। अगर ये नहीं हुआ तो सहजयोग क्या बना? जब आप वृक्ष हो गये तो वृक्ष की छाया में जो बैठे हैं उस पर तो कोई सी भी आफत नहीं आ सकती न! वृक्ष सारी आफत उठा लेता है। आपकी छाया में जितने लोग हैं उनसे आपके सम्बन्ध बहुत ही प्रेममय और निकटतम होने चाहिए।

अब मैं जो कह रही हूँ सब आपको अलग अलग, आप ही को, कह रही हूँ। किसी और के लिये नहीं कह रही, ये बात समझ के सुनिएगा। बहुत से लोग हैं जैसे मैं कहती हूँ तो दूसरे का सोचते हैं कि माताजी उनके बारे में तो नहीं कह रहीं। तो अपनी ओर ये चित्त देना चाहिए कि माँ हम सब को अलग-अलग प्यार करती हैं। हरेक के बारे में जानती हैं अलग-अलग। इसी प्रकार हमको भी हरेक बारे में अलग-अलग जानना है। जब हम अपने घर वालों को ही प्यार नहीं कर पाएँगे तो हम बाहर वालों को नहीं कर सकते।

घर वालों की जरूरतें—मानते हैं बहुत से लोग पार भी नहीं होते। हो सकता है उनमें त्रुटियाँ होंगी। लेकिन उनकी जो जरूरतें हैं, उसे करिये। पार की बात तभी मानेंगे जब आप में कोई अन्तर

देखेंगे। अगर आप डंडा लेकर कहें "तुम पार क्यों नहीं होते हो, तुम सहजयोग में क्यों नहीं आते, तो कोई सहजयोग में नहीं आएगा। उल्टे यह तरीका सहजयोग का नहीं है। सहजयोग का तरीका है कि पहले अपने आदर्श से, अपने स्वयं व्यक्तित्व से दूसरों को प्रभावित करना। जब दूसरा प्रभावित हो जाएगा, तो धीरे-धीरे उसे सहज में लाओ। कोई ठेल-ठाल के आप ले भी आए, समझ लीजिए, ढकेलते हुए वहां से, ले आए किसी को आप, बिठा दिया। तो क्या वो पार हो जाएगा? —यह आप ही बताइये। पूर्ण स्वतन्त्रता में उसे आना होता है। आज नहीं, कल ठीक हो जाएगा। तो ये ख्याल रखना चाहिए कि जब हम बन रहे हैं तो हमारे साथ 'अनेक' बन रहे हैं। और वो जो अनेक हैं उनकी दृष्टि हमारे ऊपर है। हम कैसे बन रहे हैं ये बहुत जरूरी चीज है। और इसमें ये बात है समझ लीजिए, आपके कोई गुरू हों—realised-soul भी हों, तो वो बिचारे अपनी ही मेहनत से जो कुछ करना है, करते हैं। आपसे नहीं कहेंगे कि आप भी कुछ बनिए। कहेंगे ये तो बेकार हैं ही, चलो बस हमको गुरू मान लिया इसी में धन्य समझो; अगले जन्म में देखा जायगा। लेकिन माँ ने जरा बड़ा काम निकाला है। वो चाहती हैं कि हरेक को गुरू बनाना है। जरा कठिन काम है। और नहीं भी है। आप जानते हैं कि आप लोग सब बन रहे हैं, धीरे-धीरे। सब घड़ते जा रहे हैं, बनते जा रहे हैं। इसलिए जिस वक्त आप बन रहे हैं, आप दूसरों का ख्याल बहुत करें। आपके अड़ोसी-पड़ोसी सब लोग, सबको आप लोग क्या माफ कर देते हैं? क्या आपने सबको क्षमा कर दिया? क्षमा करना बहुत सीखना है। बहुत बार कहा है कि ये क्षमा जो है, ये सबसे बड़ा साधन और सबसे बड़ा आयुध हमारे पास में है। और इस जब बड़े आयुध को हम इस्तेमाल नहीं करेंगे, इसका उपयोग नहीं करेंगे, तो हमारे पास और कोई इस कलियुग में और साधन नहीं जुट पायेंगे। 'क्षमा' का साधन करके, 'क्षमा' की दृष्टि से लोगों की ओर देखना चाहिए। क्षमा, से ही शान्ति आती है। जिसमें क्षमा नहीं आएगी, उसे शान्ति नहीं मिल सकती। पहले तो आप सब को क्षमा करें और फिर अपने को भी क्षमा करें। दोनों चीजें जब आप कर पायेंगे तभी आप देखियेगा कि आपके अन्दर स्वयं शान्ति आ जाएगी। आज्ञा चक्र खुल जाएगा तो शान्ति के द्वार खुल जायेंगे।

अब दूसरी बात जो मेरे सामने हमेशा रहती है और मैं आपसे कहती भी हूँ, कि इस बनने में आप की मेहनत जो है उसमें एक तरह का discipline (अनुशासन) आना पड़ेगा। बहुत से लोग—"माँ मुझे time (समय) नहीं मिलता।" और फिर आप कहिएगा कि "माँ देखो मुझे ये तकलीफ थी और ये मेरी तकलीफ ठीक नहीं हुई" तो मैं भी कह सकती हूँ मुझे time नहीं था। चाहे मैं आपसे मिलूं या न मिलूं आपके लिए मेरे पास हमेशा time रहता है। मेरा काम चौबीस घन्टे चलते रहता है। आपको सिर्फ़ अपना ही काम करने का है। इसके लिए आपको time और discipline जरूर जोड़ना पड़ेगा। इस शरीर को discipline किए बगैर ये वैसी ही मोटर-कार हो जाएगी, जो सबको रौंदती चलेगी और न जाने किस गढ्ढे में जाकर गिर जाए।

इसको discipline करने के लिए बहुत आसान तरीका है। पहले अपने ओर देखें कि इसके अन्दर दो शक्तियां जो चल रही हैं, एक तो इच्छा शक्ति और दूसरी कार्य शक्ति। इच्छा शक्ति जो है उसमें ये होना चाहिए एक ही इच्छा होनी चाहिए, 'शुद्ध इच्छा'। शुद्ध इच्छा क्या है? कि आत्मा-कार हम हो जाएं। आत्मा से एकाकार हो जाए। ये शुद्ध इच्छा है। बाकी सब इच्छाएं आप छोड़ दीजिए, अभी इस वक्त। एक क्षण के लिए तो छोड़िए। और कुछ नहीं माँ से माँगना, "बस, आत्मा से एकाकार हो जाएं।" एक ही शुद्ध इच्छा को मांगें। बाकी सब छोड़ दीजिए। कि ये होना है, ये चाहिए, वो चाहिए, घर चाहिए, मकान चाहिए, ये सब चीज छोड़ दीजिए इस वक्त। इस वक्त सिर्फ़, ये अपने मन में विचार करें कि "एक शुद्ध इच्छा है, कि

परमात्मा से एकाकार होना है, हमें आत्मा से एकाकार होना है और हमें कोई इच्छा नहीं है।" देखिये कुण्डलिनी इसी वक्त सब आपकी चढ़ गई।

और दूसरी, क्रिया शक्ति में ये होना चाहिए कि जो कुछ भी हो वो सहज हमसे हो। सहज का मतलब लोग सोचते हैं कि हम बैठे रहें और हमारे गोद में चीज आ जाए। ये बड़ी गलत भावना है। ये बड़ी गलत भावना हमारे अन्दर सहज के बारे में आयी कि हम बैठे रहें और हमें सब चीज मिल जाए। आपने देखा है कि एक बीज है, उसको जब हम मां के इस पृथ्वी में छोड़ते हैं, उसके उदर में, तो दिखने को तो वो सहज ही से sprout (अंकुरित) होता है। लेकिन क्या वो सहज है ? आपने उसकी मेहनत देखी, बिचारे एक छोटे से एक' उसके अंकुर की, जो कि उस धरती को फोड़कर निकल आता है। आपने उस छोटे से मूल की मेहनत देखी जिसका एक छोटा सा cell (कोष) किनारे में होता है, आखरी होता है, जो कितनी मेहनत से अपने को अन्दर गढ़ता है। अब उसकी शुद्ध इच्छा क्या है, कि इस पेड़ को मैं गढ़ दूं जैसा भी हो। उसकी और कोई इच्छा आपने देखी ? उसमें सिर्फ एक ही विचार होता है किसी तरह से मैं जमीन के अन्दर ऐसी जगह पहुँच जाऊँ जहाँ से पानी का स्रोत को पहुँचा दूं और वहाँ से पानी खींचकर के मैं इस पेड़ को दे सकूं। और वो कुछ नहीं सोचता। और 'कितनी' मेहनत, पत्थरों से लड़ता है, मिट्टी से लड़ता है, तो कोई उसे रौंदता है कभी कुछ करता है। सब चीज से गुजरता हुआ धीरे-धीरे, बड़े wisdom (बुद्धि) के साथ अपना चलते जाता है। कोई पेड़ आया या कुछ आया बीच में तो उसके गोल घूम जायगा, उसकी जड़ें आयेंगी तो उसके गोल घूम जायगा। और कहीं अगर कोई पत्थर-वत्थर होगा तो उसके भी गोल घूमकर और अपना मार्ग बना लेगा।

उसी तरह, एक सहजयोगी को बहुत सूझ-बूझ के साथ चलना चाहिए और समझदारी अपने ऊपर जिम्मेदारी के तौर पर लेनी चाहिए, कि "हम समझदार हो गये हैं।" हमारे अन्दर समझदारी जो है ये हमारा एक प्रतीक है, हमारा एक ध्येय है। समझदारी जो है उसको हम अपने ऊपर—जैसे कोई आदमी शान से तिलक लगाता है ऐसे समझदारी का हमने तिलक लगाया और हम समझदार हैं। समझदारी का मतलब है जो आदमी समझदार होता है वो Tantrum (झुंझलाहट) में नहीं जाता बिगड़ता नहीं। छोटी-छोटी चीजों के लिए फिसलता नहीं है, और कहता नहीं है कि ये चीज ठीक नहीं है, वो चीज ठीक नहीं है। समझदारी से कहता है। बड़प्पन की निशानी है, maturity की निशानी है। सहजयोग में जो आदमी mature (परिपक्व) नहीं हो सकता वो सहजयोग के लायक नहीं है, सहजयोग के लायक नहीं है। आपको mature होना पड़ता है और समझदार भी।

दिखने में चीज जितनी कठिन है उतनी नहीं है। हमने छोटे छोटे बच्चों को भी देखा है सहज योग में; बड़े समझदार, और हर चीज को बड़ी समझदारी से समझते हैं। उसी तरह से आप में ये समझदारी का तिलक लग गया है कि आप सहज योगी हैं और समझदार भी और इसमें आपके माँ की शान की बात है। जो नासमझ हैं उनके लिए लोग ये ही कहेंगे कि इनकी मां ने कोई इनको शिक्षा नहीं दी, बिल्कुल बेकार। कहने को तो आदिशक्ति है, और कुछ बच्चे देखो तो बिल्कुल बेकार हैं। इस समझदारी को लेते हुए आदमी को अपनी ओर देखना चाहिए "कि हमारे ऊपर इसका उत्तर-दायित्व है, जिम्मेदारी है, कि हम संसार के सामने एक समझदार इन्सान बनें।

आज नया साल के इस शुभ अवसर पर मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूँ कि अब सहजयोग में हम लोगों को बहुत mature होना है। नये लोग आएं, बड़ी खुशी की बात है। उनके आगे, जो पुराने सहजयोगी हैं, उनकी समझदारी आनी चाहिये। आए हैं, अभी पार नहीं हुए, कुछ हैं। किसी में थोड़े vibrations (चैतन्य-लहरियां) आ रहे हैं,

किसी में नहीं आ रहे हैं। कुछ कमी है किसी में कुछ problem (बाधा) है। कोई एकदम से ही ज्यादा पार हो गया है तो वो अपने को समझ बैठा कि मैं बहुत बड़ा आदमी हूँ। सब तरह की गल्तियाँ होती हैं। आपने भी ये गल्तियां करी हैं, उसको भूलना नहीं। इसलिए उनके प्रति एक तरह का बड़प्पन—बड़प्पन का मतलब नहीं कि नखरे करना या अपने को दिखाना कि हम कोई बड़े आदमी हैं। बड़प्पन का मतलब है कि एक तरह की paternal 'पिता जैसी' feeling 'भावना' है, पितृत्व की feeling, मातृत्व की feeling। इससे उनकी ओर देखना, उनके प्रति प्रेम, जो कि माँ का आप पर प्रेम है, उसी तरह का आपको प्रेम होना चाहिए। अगर हम ये सोचते कि दुनिया के लोग जो हैं वो बिल्कुल बेकार हैं, तो कुछ काम होता क्या सहजयोग में? या अगर हम अपने सी तौलते बैठे रहते, तो हम तो बिल्कुल अकेले हैं दुनिया में किस से तौलें अपने को? लेकिन वो सवाल ही नहीं उठता। यहाँ तो ये है कि कितनों को अपने आंचल में भर लें। अभी हमारा वजन ही कम हो रहा है। इस आंचल में किस-किस को भर लें, किसे-किसे रखें—यही फिक्र लगी रहती है।

इसी प्रकार आपकी भी दृष्टि में वो समझदारी का प्यार होना चाहिए। उसमें ये नहीं कि आप लोगों को कहें कि कोई आप बहुत बड़े अकड़ूखाँ हैं। लेकिन एक अत्यन्त सरल, सहज प्रेम-भाव अपने अन्दर रखना चाहिए। और उस सहज-सरल प्रेम भाव में पितृत्व की धारणा, एक समझदारी की भावना रखनी चाहिए। मैं तो आप पर बहुत विश्वास रखती हूँ, किसी भी मामले में। चाहे वो पैसे की बात हो चाहे, समझदारी की। मैं यही सोचती हूँ कि मेरे बच्चे कभी नासमझ नहीं हो सकते। कभी-कभी होते हैं। लेकिन विश्वास मेरा पूरा है कि आप लोग सब समझदार, बहुत ऊंचे किस्म के आदमी हैं।

अब देखिये अपने देश में भी कितने हालात खराब है। यहाँ ढूंढे से भी कायदे का एक आदमी नहीं मिलता। अब सहजयोग में आने के बाद अगर आप अपने हालात ठीक नहीं करेंगे तो जैसे करोड़ों इस देश में पड़े हैं वैसे ही आप होंगे, विशेष क्या होंगे? आपको एक विशेष रूप में होना है।

अब बहुत से लोग ये कहेंगे कि "माँ, देखो भई आजकल अगर बेईमानी नहीं करो तो पेट नहीं भरता। ये बात सही नहीं है। आप छोड़के देखिये। परमात्मा के साम्राज्य में कोई भूखा नहीं मरसकता। 'योग: क्षेम वहाम्यहम्'। योग: क्षेम वहाम्हयम्। फिर से कहेंगे, योग: क्षम वहाम्यहम्। योग होने के बाद क्षेम की जिम्मेदारी हमारी है। इसलिए कोई कोई भी गड़बड़ काम करने की जरूरत नहीं, बाकी सब हम देख लेंगे। कैसे कैसे हालात से आपको परमात्मा ने बचाया है और वो बचायेंगे आपको। उसके लिए आप निश्चिन्त रहिए।

इसीलिये किसी भी चक्कर में आने की जरूरत नहीं है। आजकल हजारों चक्कर चल पड़े हैं। हर तरह के चक्कर हैं जिनमें से सहजयोगियों को निकलना है। समझदारी क्या है? अब जैसे कि हमारे यहाँ भी dowry system (दहेज प्रथा) चल रहा है। सहजयोगियों को किसी को भी dowry देना शोभा नहीं देता, न लेना।

पहली बात ये है कि ऐसी ओछी बात नहीं करनी। दूसरी ये कि बहुत से लोगों में होता है कि हमारी ही जाति में हम विवाह करेंगे। ये भी मूर्खता का लक्षण है। आपकी जाति कौन सी है? आपकी तो जाति नहीं है, आप तो योगी हो गये। योगियों की कोई जाति नहीं होती। सन्यासियों की भी कोई जाति होती है क्या? अभी हम एक दरगाह पर गये थे तो उन्होंने कहा कि 'साहब ये तो औलिया चिश्ती,—चिश्ती जो थे उनके nephew, (भतीजे) ये भी औलिया थे। तो मैंने कहा "औलिया की क्या जात होती है" कहने लगे "औलिया की तो कोई जात नहीं होती। हम भी औलिया हैं

हमारी तो कोई जात नहीं।"

जात का मतलब होता है aptitude। जाति। जात—जो जन्म से पाया हो। जन्म से वो पाना नहीं होता कि ब्राह्मण कुल में पैदा हुए, कि वैश्य में, कि शूद्र में—ये नहीं होता। आप जो पैदा हुए, आपका aptitude (क्षमता) क्या है?

अपने देश की दूसरी बीमारी है, जाति। जिसको नानक साहब ने बहुत तोड़ा है। बहुत तोड़ा, नानक साहब ने, कबीर ने तोड़ा। लेकिन अब इन्होंने दूसरी जाति बना ली। उसमें भी अब जाति बन गयी। सिक्खों में भी कोई कम जातियाँ है? वो भी जातिये हो गई। सिक्ख एक जात हो ही नहीं सकती। जो सिक्ख हैं वो तो जात हो ही नहीं सकती। वही तो बात है। जो कुछ जो तोड़ता है वही वो बन जाता है, पता नहीं कैसे?

हिन्दुओं में जो जातियां थीं वो भी सारी जितनी भी जाति थीं, वो सारी अपने कर्म के अनुसार थीं। नहीं तो आप ही बताइये कि मत्स्यगंधा, जो कि एक धीमरनी थी, उसका लड़का, जो कि उसका विवाहित रूप में बच्चा नहीं जन्मा था, इस तरह का बच्चा व्यास हुआ जिसने गीता लिखी। सोचिये कहां से कहां बात पहुँच गयी। क्यों? ऐसा क्यों? क्यों नहीं किसी ब्राह्मण कुल का 'शुद्ध' मनुष्य जिसे कहते हैं—ये तो बड़ा भारी मजाक है! लेकिन, ऐसे आदमी ने क्यों नहीं गीता लिखी? सोचना चाहिए। कृष्ण ने व्यास से क्यों लिखवाई? क्या बात है? वो तो इसलिए कि यही धारणा तोड़ने के लिए कि मत्स्यगंधा से जो पुत्र हुआ है, उससे मैं गीता लिखवाऊं। विदुर के घर जाकर उन्होंने साग खाया, क्यों? इसी चीज को तोड़ने के लिये। भीलनी के झूठे बेर राम ने खाए। क्यों? क्यो कि ये इसी तरह की बेवकूफी की बातें तोड़ने के लिए। वो क्या बेर के बगैर जी नहीं सकते थे? और पर कोई खा भी ले क्योंकि रामचन्द्र जी ने खाए, तो फौरन जाकर मुँह धो लेंगे। ये सब काम उन्होंने क्यों किये? ये सोचना चाहिए। जान बूझकर क्यों किए? क्योंकि इस तरह की जो प्रथाएं अपने देश में व्यवस्थित हो रही थीं—जाति-पाति सब फालतू की चीजें—उसको पूरी तरह से तोड़ने के लिए। अब सोचिए, हजारों वर्ष पहले ये काम हुआ। राक्षस के घर में प्रह्लाद को पैदा किया। स्वयं कृष्ण के मामा राक्षस थे। कहां से कहां देखिये उनकी छलांग कहां मारी, देखिए। कृष्ण भी उतरे कहां, तो मामा राक्षस! अरे भई कोई और अच्छा नहीं मिला था तुमको! कंस ही को मामा बनना था? क्यों बनाया? सोचना चाहिए। इसलिए कि मामा होते हुए भी उसका मर्दन करना है।

रिश्तेदारी जो है, जिसके पीछे में हम लोग देश बेच देते हैं—ये रिश्तेदार, मेरा भाई, ये मेरा बेटा, ये फलाना, ये सब हो जाए, ऐसी जो व्यर्थ की चीजों में हम जो इतना महत्व देते हैं। उन्होंने कहा कि "कंस अगर राक्षस है तो चाहे वो मेरा मामा हो, उसको मारेंगे।" इसलिए इस तरह की जो हमारे अन्दर, हिन्दुस्तानियों की खास चीज है। अंग्रेजों की बात और है, उनसे बात करते वक्त तो और बात करनी पड़ती है, आप लोग की बात और है। उन लोग के यहां तो बेटा क्या, वो तो किसी को नहीं मानते। माने तो और उससे नजदीक रिश्ता कोई नहीं होता। बेटा है बाप को मार डालेगा, बाप है बेटे को मार डालेगा। मानो सभी राक्षस हैं इस मामले में। और हिन्दुस्तान के लोग ये हैं कि अगर बेटा, अगर वो murderer (खूनी) भी है तो भी माँ जो है कहेगी "बेटे कोई बात नहीं murder ही करके आया है न, हाथ धो लो खाना खा लो। कुछ बात नहीं है तुम तो मेरी जान हो, कुछ हर्जा नहीं। तुम ये खाना खा लो चाहे murder करके आए हो।" ये अपना देश है! ऐसी जो हमारी अंधी आंख है, उसको खोलने के लिए ही ये किया। इसी प्रकार जाति-पांति में फिर हमारा जो एक अंध-विश्वास मन्दिरों में, मस्जिदों में और इन सब चीजों में है, मैं तो कहूँ गुरुद्वारों में भी, उसकी तरफ दृष्टि उठाने के लिए भी लोगों

ने बड़ी मेहनत की, बड़ी मेहनत की। नानक साहब ने खुद ग्रंथ साहब इसलिए बनाया कि उन्होंने कहा कि शास्त्रों में ये लोग तो interpretations (अर्थ) लगाते हैं, तो उन्होंने जो realised souls (सिद्ध आत्माएं) थे, ऐसे ही गुरुओं का वो ग्रंथ साहब बनाया। अब वो ही ग्रन्थ साहब पढ़ रहे हैं अरे भई उसमें क्या लिखा है वो तो देखो। जो बात उन्होंने असल कही है उसका essence (निचोड़) तो पकड़ो, नहीं तो नानक साहब के साथ भी ता ज्यादती हो रही है। इसलिए इस तरह का confusion (भ्रांत स्थिति) अपने सभी धर्मों में इतनी बुरी तरह से हो गयी है। यहां तक लोग कहते हैं कि मुहम्मद गजनी स्वयं साक्षात् कृष्ण का अवतार था क्योंकि ब्राह्मणों ने लूट मचायी थी, इसलिए 'कृष्ण' ने मुहम्मद गजनी का अवतार लिया था। कहानी ऐसी है। और जब उन्होंने सोमनाथ को लूटा तो वहां से शंकर जी भागे और भागते-भागते भैरों नाथ जी के मन्दिर में घुस गये और उनसे कहा "भईया तुम मुझे बचाओ उससे, ये तो मेरे पीछे पड़ गयो।" उन्होंने कहा कि "आप तो शिवजी हैं, आप किससे डरते हैं? आपको क्या डरने की बात है, आप तो एक नेत्र खोल दीजिए तो ठीक हो जाए।" उन्होंने कहा "भईया, तुम जाके देखो ये कौन है। वो सो रहा है।" जाकर देखा इन्होंने—कहते हैं, भैरों नाथ जी जो गए तो उन्होंने देखा कि वहां विराट साक्षात् सो रहे हैं। उन्होंने कहा, "बाबा रे बाबा इनको कौन मारेगा?" तो भैरोंनाथ जी ने कहा कि "एक चीज मां ने मुझे दी है, वो शक्ति मैं इस्तेमाल करता हूं।" तो भ्रमण देवी ने भृगों की शक्ति दी थी। तो उन्होंने भृगों की शक्ति के इस्तेमाल करने से भ्रमर गए और उन्होंने गुनगुना के उनको सोने ही नहीं दिया। तो कृष्ण को सोना जरूरी है, बीच-बीच में, नहीं तो बहुत ही उपद्रव हो जाय संसार भर में। क्योंकि उनकी हनन शक्ति बहुत जबरदस्त है। और वो परेशान होकर के चले गये, ऐसा लोग कहते हैं। इसमें सही तथ्य है या नहीं इस मामले में मैं नहीं कहूँगी। लेकिन इतना जरूर कहूँगी कि जब इन्सान को किसी भी चीज़ के बारे में इस तरह से लोग तंग कर देते हैं तो वो उस तरह की कहानी भी बना सकता है। जब धर्म के नाम पर इतने अत्याचार, खून-खराबी, ये वो सब हो रहा है, तो भगवान को भी लोग कह सकते हैं कि भगवान कोई चीज नहीं है। भगवान में भी विश्वास करना असम्भव सा हो जाता है। उसमें मैं उनका दोष नहीं समझती, क्योंकि जो भगवान का नाम लेकर के काम कर रहे हैं वो अगर इतने महादुष्ट हैं—अब समझ लीजिए एक योगी साहब हैं वो बन्दूक बना रहे हैं। अभी मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आता कि योगी का और बन्दूक का क्या सम्बन्ध है (भई तुम बता दो, तुम्हारा नाम योगी है)। मुझसे बहुतों ने पूछा कि योग का बन्दूक का क्या सम्बन्ध है? मैंने कहा न तो कृष्ण का आयुध है, न देवी का—बन्दूक, बहरहाल ये कोई आयुध जोड़ रहे होंगे! तो इस प्रकार के विक्षिप्त और विचित्र लोग आजकल के जमाने में संसार में आए हुए हैं। इससे भी भगवान का नाम जो है, लोग सोचते हैं कि ये तो कहने की बात है कि भगवान है, भगवान हो नहीं सकता। अब सहजयोगी ही सिर्फ जानते हैं पक्की बात 'जानते' -माने सिर्फ बुद्धि से नहीं, लेकिन vibration (चैतन्य लहरियों) से कि परमात्मा है और उनकी विश्वव्यापी शक्ति जो है संचालित है। सिर्फ सहजयोगी जानते हैं। अब जान तो बहुत कुछ लिया है आप लोगों ने। मैं आपसे बताती हूं कि आप लोग जितना जानते हैं बड़े-बड़े योगी भी नहीं जानते—माने असली योगी। असली योगी की बात कह रही हूँ, वो भी नहीं जानते होंगे। लेकिन कुछ जानना ऐसा हो गया है जैसे रेडियो के अन्दर से music (संगीत) आता है और रेडियो पर असर नहीं होता। आर-पार। जो कुछ भी जाना है, बहुत कुछ जान गये आप लोग। और vibrations में भी जाना है। लेकिन वो कुछ vibrations अपने 'अन्दर' नहीं चल रहे। बाहर चल रहे हैं। उनको कुछ 'अन्दर' भी चलाना

चाहिए। इसलिए मैं कहती हूं कि अपने को discipline करिए। अपना instrument (यंत्र) ठीक करके इन vibrations को अन्दर' ले लीजिए।

इसमें मैं कहती हूं कि महाराष्ट्र में लोग मेहनत बहुत करते हैं। बड़े मेहनती हैं। और इस लिए सहजयोग में उनकी प्रगति बड़ी गहन हो रही है। गहरी हो रही है। इसलिए आपको ध्यान देना चाहिए कि रोज सवेरे उठ करके—अब इंग्लेंड में जहां इतनी ठंड पड़ती है और अंग्रेज को सबसे बड़ा गुनाह है, चाहे आप मार डालिए, उसका खून कर डालिए वो कुछ नहीं कहेगा, लेकिन अगर उसको सुबह आपने जगा दिया तो वो गया, खत्म। उसके बाद, इससे बढ़कर महान पाप है ही नहीं इंग्लैंड में। अगर आपने किसी को सवेरे नौ बजे से पहले जगा दिया तो बस आपसे महापापी, दुष्ट, राक्षस कोई नहीं। ऐसे देश में लोग चार बजे उठकर नहाते हैं, चार बजे। उनकी मेहनत। क्योंकि वो जो पहले ही discipline थी अब उन्होंने सहजयोग में लगा दी। हम लोग तो कभी disciplined हो नहीं रहे। हम लोग तो सब मुक्त लोग हैं। सब लोग ब्रह्म बने बैठे हैं उन लोगों ने इतनी मेहनत की तो क्या हम लोग नहीं कर सकते ? "अब सवेरे चार बजे माताजी उठने को मत बोलिए, बहुत ज्यादा हो जाएगा।" मैं नहीं बोलती। पर आप खुद ही सोचिए कि आपको time ही कब है ? सवेरे उठकर के ध्यान में वो लोग बैठते हैं, लन्दन की ठंड में। और उस मेहनत से ही वो लोग पा गए। वहां तो नर्क है। जब नर्क में उन्होंने स्वर्ग खड़ा किया है तो स्वर्ग में थोड़े से दीप लगाना कोई मुश्किल नहीं है। ये तो स्वर्ग ही है। ऊपरी बात छोड़ दीजिए। ये तो बड़ी चीज है। ये देश बहुत महान देश है। इसमें ये काम करना कोई मुश्किल काम नहीं है।

तो इसलिए मैं बता रही हूं कि कल के, भविष्य के जो नेता लोग हैं तो आप ही यहां बैठे हुए हैं। अब कोई राजकीय या सामाजिक और जितने भी तरह के 'इक' है, वो सबमें आत्मा का ही प्रादुर्भाव होगा, नहीं तो काम नहीं चलने वाला।

कल के नेता आप लोग हैं। आप ही में से, सहजयोग से ही तैयार होंगे। और अब मुझे पूछना ये है कि आप में से इतने कौन लोग हैं जो इसके लिए तैयार हैं कि अपना जीवन एक शुद्ध सुन्दर एवम् पूरी तरह से Dynamic (कार्यशील) बनाएं। निर्भय, पूरी तरह से निर्भय होकर के, हम विशेष रूप के इंसान बनने वाले हैं और 'हैं'। आपको हो गया है। आप—जैसे कहते हैं कि ड्रिंज हो गये। एक अंडा था, जैसे समझ लीजिये ये ego, superego का, ये टूट करके और आप अब पक्षी हो गये। लेकिन एक छोटा-सा बच्चा पक्षी एक अंडे से भी कमजोर होता है। इसलिए इसे बहुत बढ़ावा देना चाहिए। सम्भालना चाहिए, संजोना चाहिए। और शुद्धता रखिये; प्रेम 'शुद्ध' होना चाहिए। 'शुद्ध' प्रेम। इसकी भी भावना बहुत कम लोगों को है।

ये शुद्ध प्रेम क्या होता है ? शुद्ध प्रेम वो होता है कि जिस में न तो कोई किसी प्रकार का greed (लालच) है और न ही किसी प्रकार की lust है, माने न कोई तरह की लालसा है, न लालच है और न ही उसमें कोई तरह की गंदगी है। वो बहते रहता है।

इस शुद्ध प्रेम का अपने अन्दर से प्रकाश बहना चाहिए। ये शुद्ध इच्छा हमारे अन्दर होनी चाहिए। और जब ये होने लग जाता है तभी आप वन्दनीय सहजयोगी हो जाते हैं। उससे पहले नहीं।

और ये एक जो बनने की विशेषता है, इसकी ओर जरूर ध्यान दिया जाए। आप आज कहेंगे कि 'देखिए मां हमारा ये चीज ठीक कर दीजिए, मां वो ठीक कर दीजिए। हां, भई चलो ठीक कर देंगे। कर देंगे। लेकिन आपका कुछ बनेगा नहीं मामला। कोई बच्चा है कहता है "मां हमें ये दे

दो।" चलो भई लो, तुमको चाहिए, लो। लेकिन आप कोई विशेष तो बने नहीं। आपने कुछ पाया तो नहीं। आप ऐसे ही मां के आगे पीछे दौड़ते रहे। क्या फायदा ? आपका जो कुछ मां बनाना चाहती हैं वो अगर आप नहीं बनेंगे तो मां की भी तो शुद्ध इच्छा पूरी नहीं होती। एक अजीब तरह की बात है, कि आपको बनाना चाहिए, ये मेरे अन्दर शुद्ध इच्छा है। और आपके अन्दर शुद्ध इच्छा है कि आपको कुछ बनना चाहिए। जब हमारा ऐसा मेल बैठा हुआ है तो सिर्फ शुद्ध इच्छा से रहें हम।

और शुद्ध इच्छा पर रहने के लिए, 'शुद्ध' प्रेम—पहली चीज। शुद्ध प्रेम। और शुद्धता लाने के लिए अपने चित्त को शुद्ध करना चाहिए। हम किसी के यहां जाते हैं; तो क्या देखते हैं—'अरे इनके यहां इतनी अच्छी चीज आयी है, ये कहां से आ गयी ? ये कैसे आ गई ?" लगा दिमाग दौड़ने। ये नहीं देखते कितनी अच्छी चीज है, कैसी बनी है; वाह, वाह, वाह ! देखिये इसका मजा उठाइये। अच्छा है, सरदर्द अपनी नहीं, दूसरे की है, बड़ा अच्छा है।

इस तरह से जब आप दूसरों की ओर देखेंगे appreciative temperament(खुश मिजाज)होना चाहिए लेकिन ज्यादातर दृष्टि दोषों पर जाती है मनुष्यों की। जैसे कोई कहेगा "साहब वो अच्छी तो है लड़की, लेकिन attractive (आकर्षक) नहीं है मतलब क्या ? attractive माने क्या ? आप एकदम जाके, एकदम क्या उससे 'चिपक जायेंगे क्या, attractive क्या होता है ? मेरी आज तक समझ नहीं आया, कि 'attractive' के माने क्या होता है। खासकर attractive शब्द आज तक मेरे समझ में नहीं आया। कि "साहब वो attractive नहीं है।" मैंने कहा भई attractive के माने क्या होता है ? क्या चीज attract आपको करती है ? उसका नाक, मुंह, हाथ, skin (चमड़ी), कपड़े, शपड़े क्या ? कौनसी चीज ?

Attract तो एक ही चीज करनी चाहिए, दूसरे की आत्मा; वही तो आनन्द देने वाली चीज है दूसरे की। वाह्य को दृष्टि जो है इसमें चित्त हमारा बड़ा उलझता है।

चित्त को 'गहन' उतारना पड़ता है। Penitrating, गहन। तब कैसे possible (संभव) है। अगर आप पहले ही देखते साथ, "साहब वो तो ठीक नहीं है, इनका ठीक नहीं है।" हो गया काम खत्म। वो आदमी खत्म, उसकी सब आत्मा खत्म। उसकी सब जो कुछ भगवान ने मेहनत की है वो सब खत्म। "वो तो ठीक नहीं है"—बस हो गया काम। आप उसके गहन उतरे क्या ? देखा क्या ? खोजा है क्या, क्या चीज है ? गहन उतरके देखिए। और फिर आप देखेंगे कि गहन में तो भई कमाल है। ऊपर से चाहे जैसे भी हो, और ज्यादातर से जो ऊपर से बहुत होते हैं कभी-२ बड़े गड़बड़ होते हैं, अन्दर से।

इसलिए गहन में क्या है उधर दृष्टि है क्या ? फिर देखिये प्रेम कितना बढ़ता है। 'प्रेम गहन चीज है।' किसी की ओर दृष्टि करने में उसकी गहनता को नापें। और आप खुद ही गहन उतरते चले जाएंगे। एक है न, "दिल में किसी के राह किए जा रहा हूं।" किसी के दिल में मैं राह किए जा रहा हूं। रास्ता बनाते जा रहा हूं। इसी प्रकार उसकी गहनता पर उतरिये; Superficialities (वाह्य बातों पर) पर रहने से आदमी का चित्त गहन नहीं उतर सकता। और जब तक चित्त गहन नहीं उतरेगा, तब तक आपकी गहनता नहीं बढ़ने वाली।

तो चित्त को पहले गहन उतारिये। वाह्य की चीजों में बहुत है। जैसे हमारे ladies हैं—आदमियों का भी बताऊंगी,—कि अब ब्लाऊज match हुआ कि नहीं हुआ, उसके लिए सर फोड़ डालेंगी। Blouse should be matching। जब हम लोग यहां थे तो कोई matching ब्लाऊज ही नहीं पहता था। नीले रंग की साड़ी तो पीले रंग का ब्लाऊज। सीधा हिसाब। और पीला नहीं हुआ तो लाल रंग। चल जाएगा ! मतलब contrast border तो

पहले होता नहीं था, वो contrast कर लिया। नहीं हुआ तो नहीं, पहन लिया। पहले होती ही कितनी साड़ियां थी किसी के पास में। दो या तीन, चाहे कितने भी रईस हों। ज्यादा कपड़े कोई रखता ही नहीं था। अब साहब तो matching हो गया। औरतों का इतना problem है कि अगर कोई औरत matching पहन के नहीं आयी तो खलबली मच जाएगी सारे शहर में। "क्या कपड़े पहन के आयी थी बेवकूफ जैसे!" लेकिन वो अगर अजीब-सा jean पहन के आए, दो सींग लगा के आए तो वो माडर्न है, वो modern (आधुनिक) हो गयी।

ऐसी जो हम लोगों ने चीजें norms (असूल) बना ली हैं, अपनी उस norms में हम उलझे रहते हैं। अब आदमियों की दूसरी बीमारी होती है। उनको इतना कपड़ों से मैचिंग वैचिंग का time कहां, वो तो घड़ी देखते रहते हैं। हरेक आदमी की घड़ी, "कितना बजा रही है?" "कितना time हो रहा है?" जब निकलने का time होगा, तो बजाय इसके कि बाहर निकल जाए, इत्मेनान करें, औरतों के पीछे में 'चलो भई दो मिनट बचे हैं; एक मिनट बचा है। time keeper रहे होंगे! उतने में औरतें जो हैं पच्चीस चीज भूल गये, वो भी भूल गए और भागे बाहर। हड़बड़, हड़बड़, हड़बड़। "इतना time हो गया।" घड़ी देखना, और बताना और जताना, ये भी modern चीज है। पहले जमाने में कोई ऐसा नहीं करता था। क्योंकि न तो पहले रेल गाड़ियां थीं, और रेलगाड़ी कौन आपके यहां time रखती हैं, जो आप इतनी जल्दी कर रहे हैं? न plane (जहाज) कौन आपका time रखते हैं? प्लेन में भागे जाओ, आपको पता है, yesterday (कल) आपके सवेरे के गए हुए वहीं शाम तक बैठे रहे, plane ही नहीं आया। बैठे हुए हैं। लेकिन घर से निकलते हुए ऐसी हड़बड़, सड़बड़ उसमें ये रह गया रे, वो रह गया। तीन बार गाड़ी जाके लायी, तो भी प्लेन नहीं आया! आप कहोगे कि मां ही ये सब कर रही हैं क्योंकि हम घड़ी के गुलाम हैं। हो सकता है। इतनी घड़ी की गुलामी करना भी आदमी को भी पागल बना देता है।

जब आप सहजयोग में आते हैं, आपको पता होना चाहिए कि plane खड़ा रहेगा आपके लिए। आइए आराम से राजा साहब जैसे! plane जाने वाला नहीं है, चाहे कुछ हो जाए। plane वहां खड़ा रहेगा; या देरी से आ रहा होगा। अगर आपको देर हो रही है तो कोई हर्ज नहीं, राजा साहब जैसे जाइये—और अगर समझ लीजिए, प्लेन miss (छूट) भी हो गया, दूसरे प्लेन से जाइये, हो सकता है। उसमें कोई चीज बनने वाली हो। कोई सहजयोग मिलने वाला है। ऐसा बहुत कुछ होता है। और उसका ताँता आप जोड़ते जाएं तो कहां से कहां पहुँच जाता है।

एक बार मैं Geneva से जा रही थी। बहरहाल मेरा तो प्लेन miss नहीं हुआ अभी तक कभी भी—ये भी एक आश्चर्य की बात है। एक साहब का miss हो गया था। तो वो तड़पड़ाते हुए पहुँचे प्लेन में। और उनको इत्तफ़ाक से मेरे पास जगह भी मिली। बड़े nervous (परेशान), उनकी हालत खराब। महाराष्ट्रीयन थे। तो मैंने समझ लिया कि ये आ गए मेरे चक्कर में! मैंने कहा "करेला नीम चढ़ा" इनको अब फांसना चाहिए। तो मैंने मराठी में कहा "साहब आपको परेशानी क्या हो गयी।" तो उन्होंने मराठी में शुरू कर दिया, असली मराठी में। कहने लगे "ये प्लेन मैंने miss कर दिया। देखिये कितनी, ये हो गया।" मैंने कहा "कुछ नहीं miss किया आपने। आपके लिए कुछ अच्छी चीज ही होने वाली है इस प्लेन में।" मेरी ओर देखा, उन्होंने कहा, "क्या अच्छी चीज होगी?" तो देखा। "क्या आप माताजी निर्मला देवी हैं?" मैंने कहा "हाँ"। वो गए काम से! हो गए पार, प्लेन में ही! उनका नाम है डॉ० मुतालिक। और उन्होंने कहा, "साहब मैं तो इतना परेशान था और मुझे क्या मालूम

था, कि आत्म-साक्षात्कार मिलने वाला है।" मैंने कहा "हाँ, इत्मिनान से चलो।" और उसके बाद मालूम है कहां से कहां बात पहुँच गयी UN में वो ले आए, इसको ले आए, उसको ले आए। वो बहुत बड़े आदमी हैं, WHO के वो डायरेक्टर हैं। लेकिन 'वैसे' वो ना आते शायद। और इत्तफ़ाक—सहज, हो गए पार। तो ये सब मजे देखने के हैं। तो इतनी ज्यादा घड़ी की गुलामी नहीं करनी चाहिए।

आखिर ये सोचिए कि इतने दिन घड़ी बाँध के भी हमने क्या पाया ? यूं ही—मतलब अपने बाप-दादाओं ने भी घड़ी बाँधी ही थी, हालांकि उनकी ज्यादातर खराब ही रहती होगी। इतनी घड़ी से अपने को बांध के सिवाय nervousness के हमने कुछ नहीं पाया, और इस घड़ी की गुलामी में जो आजकल modern चीज हमने जानी है और जो निकल आयी है वो है Leukaemia, (बीमारी जिसमें रक्त की कमी हो जाती है) इसलिए अगर आपको Leukaemia नहीं पाना है तो इस घड़ी को आप तिलांजली दे दीजिए। कभी इसको आगे रखिए कभी पीछे रखिए। मैं भी ऐसे ही करती हूँ। या एक ही काँटा रख लीजिए। जैसे किसी ने पूछा "कितना बजा है ?" तो कहना "साढ़े"। या "पौना"। ठीक है। किसी से भी जोड़ लीजिए, कोई सा भी नम्बर समझ लीजिये। नहीं तो time हो नहीं रहेगा enjoy (मौज-मस्ती) करने का। अगर आप हर समय घड़ी की ही गुलामी करियेगा तो आपके पास time ही कहाँ है enjoy करने के लिए ? "भई अभी time नहीं enjoyment के लिए।" पर कहाँ जा रहे हैं आप ? इसको पकड़ना है, उसको पकड़ना है। ये जो भागा-दौड़ है इसे आप बंद कीजिए। सब पागल जैसे भाग रहे हैं।

इसी प्रकार स्त्री की बातें और होती है पुरुषों की बातें और होती हैं। लेकिन हमने अपने norms (नियम) बना लिए हैं। जैसे समय से जरूर जाना है। ये मैं नहीं कहती कि गलत बात है। अंग्रेजों ने ये बात बनायी कि अब समय से जाने से उन्होंने 'वाटरलू' की लड़ाई जीत ली। पर हार भी सकते थे वो। time से कोई फ़र्क नहीं। जब time आ गया था तो जीत गये और हार गये। इसका मतलब नहीं है कि अगर माताजी का प्रोग्राम छः बजे है तो आप नौ बजे आइये। जिसके लिए ये योगी परेशान हैं, और वर्मा साहब कि माँ जब भाषण देती हैं तब चले आते हैं बीवी-बच्चे, सब लाइन से चले आ रहे हैं, माँ बोल रही हैं अपने चले आ रहे हैं। तो कहते हैं कि भई माँ के दरवाजे सबको बंद नहीं।

लेकिन माँ का तो दरबार होता है। दरवाजे तो ठीक, लेकिन दरबार है, वहाँ 'बहुत' से बैठे हुए हैं। बहुत से ऐसे-वैसे बैठे हुए हैं जिनसे 'बहुत' बच के चलना चाहिए। ये आपको पता होना चाहिए। ये हमारे आने से पहले से ही सब जमे हुए यहीं पर बैठे हुए हैं। वो इधर भी बैठे हैं, उधर भी बैठे हैं, वहाँ भी बैठे हैं। इसलिए माँ के साथ liberty (स्वच्छन्दता) नहीं लेनी चाहिए इस तरह की। वहाँ पर समय से पहले पहुँचना चाहिए। परमात्मा का काम है। परमात्मा के काम के लिए पहले से सुसज्ज होके आइये। जान लेना चाहिए। लेकिन ये discipline (अनुशासन) आप अपना लगाइये, मैं नहीं लगाने वाली दो चार रपट पड़ेगी फिर आप लोग फिर आ जायेंगे। नुकसान होगा। समय से पहले वहाँ पहुँचना चाहिए। अपने ऊपर जिम्मेदारी लेकर के आप जिम्मेदार लोग हैं। पहले से पहुंचना चाहिए। बच्चों को भी सिखाएं। "माँ का प्रोग्राम है।" कोई हर्ज नहीं एक कप चाय कम पी ली तो कोई हर्ज नहीं। चलो, आज माँ का प्रोग्राम है बहुत बड़ी बात है।" इसलिए समय से पहले पहुँचना चाहिए। लेकिन मैं नहीं कहूँगी। मैंने इनसे भी कहा दरवाजा खुला रखो।

लेकिन आप ही को समझना है, आप ही को जानना है, और आप ही को मानना है और अपने

को सम्भालना है। किसी पर भी सहजयोग में जबरदस्ती, जुल्म, कोई चीज का restriction (रोक) नहीं है हमारी ओर से। लेकिन वो हो ही जाता है automatically (स्वतः) आप जानते हैं। आप पर automatically इसका प्रतिबन्ध लग जाता है क्योंकि परमात्मा के साम्राज्य का जो आनन्द है वो तो आदी रहा है, लेकिन उनके rules-regulations (नियम-अधिनियम) भी चलते हैं और वो 'बड़े ही' कमाल के rules-regulations हैं। इसलिए अपने को ही सम्भाल के रखना है। नतमस्तक होकर के ये सोचना है कि "आज दरबार में जाने का है।" समझ लीजिए आपको—दिल्ली दरबार में पहले लोग जाते थे, आपको पता होगा। तो दो महीने पहले से तैयारी होती थी। special (खास) कपड़े पहनाये जाते थे और कैसे जाते हैं उसका rehearsal (पूर्वाभ्यास) होता था और अगर आप गये हैं, तो victory (जीत) के सामने आप पीठ नहीं दिखा सकते। झुक के और पीछे ऐसे सीधे चले आइये।

अरे ये वायसराय होता किस बला का नाम है। परमात्मा के पैर के धूल के बराबर भी नहीं है। उससे भी कम। उसका तो इतना महात्म्य है। फिर, वो हमारी माँ क्यों न हो, लेकिन दरबार भरा हुआ है। और जो बड़े-बड़े देवता लोग हैं वो कायदे से बैठे रहते हैं, सब आयुध पहन के। पूरा इंतजाम रहता है। पूरे खड़े रहते हैं। और सब तैयारी से पहुँचते हैं। देखिये vibrations भी आ गए। कितने जोर की vibrations छूट रहे हैं। वो सब सज्ज होते हैं इस वक्त। जब हम बोलते हैं तो देखिए कैसे vibrations छूटते हैं। इसलिए आपको भी सतर्क होना चाहिए। वो देख रहे हैं आप सबको, कि कैसे आप चलते हैं। इसलिए सम्भल करके, बहुत नतमस्तक होकर के आना चाहिए। ये बात आपको धीरे-धीरे जान जाएगी कि आप कहाँ पहुँचे हैं, आपका स्थान क्या है, आप कौन सी ऊंची दशा में हैं। उस दशा के अनुसार आप चलें।

अभी लन्दन में शादी हुई थी वहाँ के युवराज की। बहुत दूर-दूर से लोग आए थे, क्या उसका तमाशा था, पता नहीं। लेकिन उसके लिए अमेरिका से रीगन साहब की बीवी आयीं। और वो १५ मिनट देर से आयीं, दौड़ते-दौड़ते। और सारे लोग commentary (तानेबाजी) ये हुई कि "ये औरत क्या समझेगी, ये एक model थी। अभी हो गयी राष्ट्रपति की बीवी तो क्या हुआ? जो असली था वो तो सामने सामने नजर आ गयी। ये क्या समझेगी कायदे?"

तो वो तो कोई चीज ही नहीं। वो तो कोई चीज ही नहीं। लेकिन ये जो चीज है उससे कितनी 'बड़ी' है, कितनी 'ऊंची' है, कितनी 'महान' है, उसको समझें। और इस महानता को पहचानते ही आप स्वयं उस महानता का विशेष आदर करेंगे।

मैं कोई restriction (बन्धन) नहीं डालती आप पर, आपको ही खुद grow (बढ़ना) होना है जो खुद grow होएगा, जो खुद ही इसमें बढ़कर के ऊंचा उठेगा, वो स्वयं को वैसे ही संवार लेगा। उसको कहने की जरूरत नहीं। कहने से जो काम होगा वो फिर क्या सहज हुआ? आप 'खुद' अपनी समझदारी से इसमें एक बड़प्पन, अपनी प्रतिष्ठा लेकर उठें। आप स्वयं प्रतिष्ठित हैं और उस 'स्वयं' को सामने रखकर के चलिये। आपसी बातचीत, आपसी का बोलना चालना, सब चीज में 'स्वयं' चालित होना चाहिए। Owner Driven को स्वयं-चालित कहते हैं। पर स्व तो missing (गायब) होता है उसमें। आपका स्व जागृत है। उस 'स्व' के तंत्र में चलिए। वही स्वतन्त्र है। और उस तंत्र में चलते हुए जो एक 'विशेष रूप' आप धारण करते हैं उसको देखकर ही लोग सोचेंगे "वाह, वाह! ये क्या चीज सामने चली आ रही है।"

इस पागल दुनिया में बहुत जरूरत है इस वक्त।

मुझे थोड़ी सी आपकी मदद की जरूरत है ; अगर हो जाए तो ये दुनिया पलटने वाली है, बहुत जल्दी पलट जाएगी।

आप लोग सब मिलकर के कोशिश करें। पूरी कोशिश करें कि अपना महात्म्य समझें। माताजी का महात्म्य है, जो तो बहुत लिख गये। अब आप अपना महात्म्य लिखिये। और ये जानिये कि कहाँ से कहाँ आप लोग पहुँच गए हैं, और कहाँ से कहाँ आपने पहुँचना है। आज नव वर्ष के दिन विशेष रूप से ये कहने का है। "आनन्द से रहें, सुख से रहें, चैन से रहें, हँसते रहें।" पर अपनी प्रतिष्ठा में बंधे रहें, प्रतिष्ठा अपनी छोड़ें न। और वो दिन दूर नहीं कि जब कि आप देखिएगा कि दुनिया सारी आप लोग रोशन कर देंगे।

आप सब को मेरा अनन्त आशीर्वाद।

With Best Compliments From

M/s. HANSA PAINTS & CHEMICALS

MANUFACTURERS OF SPARTAN PAINTS
1/21 ASAF ALI ROAD,
NEW DELHI

With Best Compliments From

MONTARI PHARMACEUTICALS PRIVATE LIMITED

X-60 OKHLA INDUSTRIAL AREA, PHASE-II,
NEW DELHI-110020
PH. NO.-631861

MANUFACTURERS OF ETHICAL DRUGS

Surplus capacity for manufacturing of tablets and capsules on loan licence available.
Interested parties please contact Manager at the above address.

बोर्डी पूजा : श्री माताजी का प्रवचन

बोर्डी १२-२-८४

वर्षत सकळ मंगली ईश्वरीनष्ठांची मंदियाळी अनवरत भूमंडला भेटतू भूतां ॥
चला कल्पतरूंचे आख चेतना चिन्तामणीचे गाव बोलते जे अर्णव पीयूषांचे ॥
चन्द्रमे जे अलांछन मार्तन्ड जे तापहीन ते सर्वांही सदा सज्जन सोयरे होत ॥
किबहुना सर्व सुखो पूर्ण होउनि तिही लोको भजिजो अदिपुरुखी अखंडित ॥

अब मै हिन्दी में आपको थोड़ा सा बताना चाहती हूँ । कि सहजयोग में हम लोग अब ये नहीं जानते कि हमारे बारे में हजारों वर्ष से ये बताया गया था कि ऐसे महान् लोग संसार में आयेंगे । और पहाड़ के पहाड़ ऐसे बड़े-बड़े वृक्षों के ऐसे अरण्य संसार में घूमेंगे जो बोलते हुए, चलते हुए, दुनिया को उनकी इच्छाओं की पूर्ति के कल्पतरु जैसे उनको आशीर्वाद देंगे । और उनके एक-एक व्यक्ति में जैसे सागर उमड़ते हों, जिसमें अमृत बोलता हो ऐसे सागर । ऐसे सूरज होएंगे - चमकते हुए सूरज कि जिसके अंदर कोई भी दाह नहीं, अग्नि नहीं, ऐसे चन्द्रमा जिसके ऊपर कोई कलंक नहीं ।

ये आपके वर्णन लोगों ने किये । और तीन सौ वर्ष पहले ज्ञानेश्वर जी ने; कि कितना आपका महत्व उन्होंने बताया । कितना महत्व कि कितना जरूरी है, सारी दुनिया के लिए एक आशा दी ।

इस तरह से हो रहा है और हो गया । लेकिन अभी इसकी प्रगति मेरे विचार से बहुत, बहुत धीमी; इसकी प्रगति बहुत धीमी । प्रगति आपको वजह से धीमी हो जाती है । ऐसी जगह चित्त अपना जाता है जहां हम अपने को गिरा लेते हैं ।

अपना चित्त, इस पेड़ का जैसा पृथ्वी से पूरी तरह से निघड़ित है, ऐसा आपको अपनी मां के साथ निघड़ित रखना चाहिए । और उसकी जो ऊँचाई है उसके ओर दृष्टि रखनी चाहिये । ये ऊँचाई जो भी इन्होंने हासिल की है, तो इस वातावरण से लड़ कर, झगड़ कर, बाहर आकर, सर ऊँचा उठाकर की है । और जो लोग अपना सर दुनियाई चीजों के लिये, कृत्रिम चीजों के लिए, बाह्य चीजों के लिये झुका लेते हैं, तो कैसे उठ सकते हैं ? या जो अपना चित्त इस धरती मां से हटा लेते हैं, वो तो मर ही जाएंगे ।

इसलिये हर सहजयोगी का ये 'कर्त्तव्य' है- ये पूरी तरह से कर्त्तव्य है - कि वो जाने कि सारी दुनिया आपकी तरफ आँख लगाए बैठी हुई है और आप अपने गौरव को पहचानें ।.....

आप लोग यहां मुझे वचन देने आए हैं, इस International Seminar (अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी) में कि "माँ जितनी तुम मेहनत करती हो, उसी तरह से हम भी मेहनत करेंगे ।"

उस शान्तिमय गौरव में आप अपने को ऊँचा उठाइये । अपने बारे में पूरी आपको कल्पना होनी चाहिये, कि आप हैं क्या !.....आप सबसे यही विनती है कि कृपया अपनी ओर नजर करें । आप सब सिंहासन पर बैठिए, उस सिंहासन को पाइये, उसके जैसे होइये । दुनिया के मुकाबले में आप बहुत बड़ी चीज हैं ।

माताजी श्री निर्मला देवी